प्रकाशन दिनांक
प्रत्येक महीने की ११ तारीख
पूर्ण अंक २२३/२२४ अंक
फरवरी-मार्च-२०२६

शिक्षापत्री लेखन के २०० साल का

समैयो

मासिक
Shree Swaminarayan (Gujarati Monthaly)

श्री स्वामिनारायण

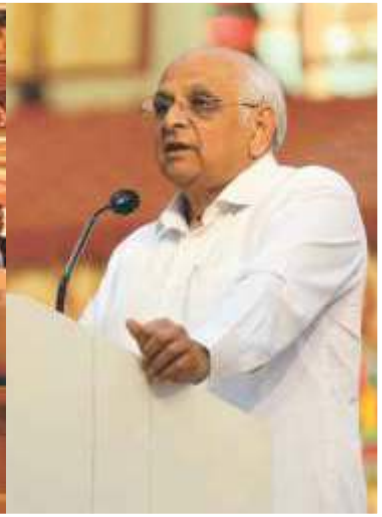


प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001

Rs.5/-



माननीय मुख्यमंत्रीश्री भुपेन्द्रभाई पटेल का सम्मान ।



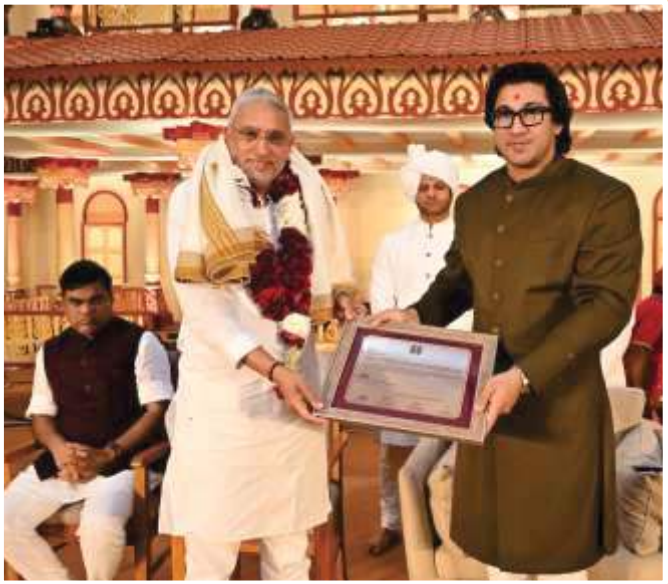


माननीय गृहमंत्री श्री हर्ष संधवी का सम्मान ।





श्री जय शाह का सम्मान ।



भाजपा के प्रदेश प्रमुखश्री जगदीशभाई पंचाल का सम्मान ।

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail :
magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००



श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १९ ● अंक : २२३/२२४ ● फरवरी/मार्च-२०२६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०७
०३.	शब्द देहे समैयो की स्मृति	११
०४.	''समैयो'' श्रीहरि के तीनो स्वरुपो के मुख से आशीर्वचन	४१
०५.	भक्ति सुधा	६७
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से	६९

अस्मदीयम्

श्री स्वामिनारायण मासिक के सभी पाठक गण,

''समैयो'', ''समैयो'' कर रहे थे। वह समैयो हम सब मिलकर पूरे धर्मकुल की आश्रय में दिव्य और भव्यरुप से मनाये। सभी लोगो के हृदय को आनंद मिला। अपने उत्सव परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से एक से बढ़कर एक होते है।

समस्त श्री नरनारायणदेव देश के संत-हरिभक्तो ने प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में शिक्षापत्री के २०० वर्ष का उत्सव हम सभी भव्य एवं दिव्य रुप से मनाये। हजारो संत और देश-विदेश के लाखो हरिभक्तोने लाभ लिये। सभी के हृदय में अपनेपन का अनुभव मिला।

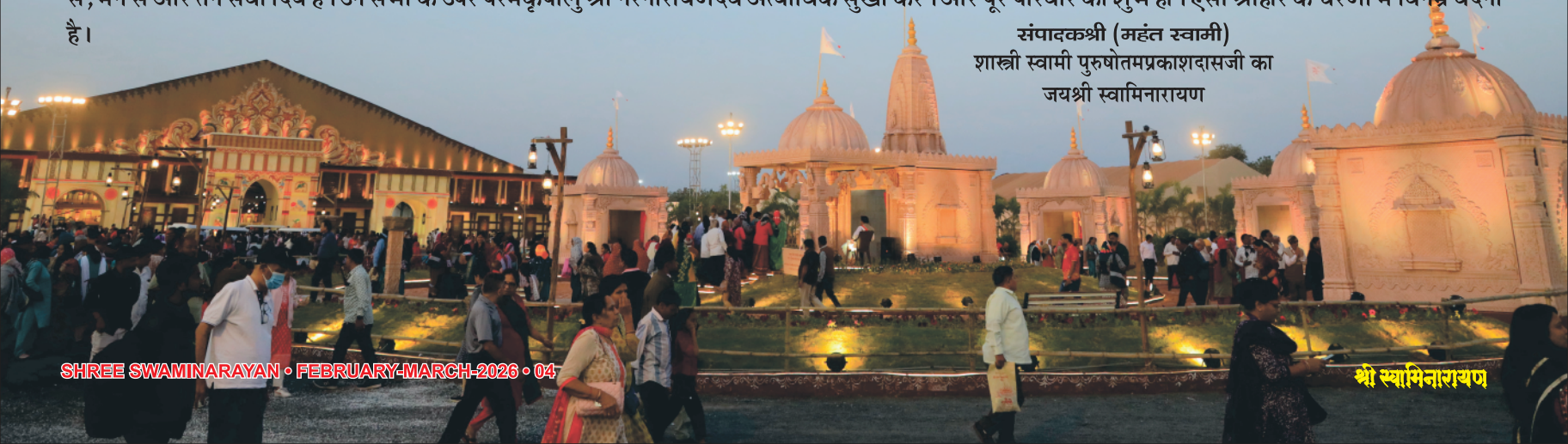
जिस-जिस ने इस ''समैयो'' में सेवा दी है उनके भक्ति का टेस्ट हुआ। भक्ति केवल माला फेरना ही नही है। भगवान के प्रति विशेष प्रेम है। जो बात हृदय को पसंद हो उसी के प्रति प्रेम होता है। जिसके प्रति प्रेम होता है। उसके लिये सब कुछ कर सकते है। जो जो लोग ''समैयो'' में तन, मन, एवम् धन से सेवा दिये है। यह भक्ति का प्रमाण है। श्री नरनारायणदेव के प्रति सच्चा प्रेम था। वे इस शिक्षापत्री समैयो में दिखाई दिये।

सच्ची भक्ति वह कहलाती है। जिस में भगवान की महिमा और समझपूर्ण प्रेम होता है। ऐसे भक्त भगवान के बचनो को तथा मर्यादा का उल्लंधन नही करते है। जिसे लोग वर्षो तक याद रखते है।

''श्रीरेवती बलदेवजी दादा को भगवान से मिलने का ''अवसर'' ता. ५-३-२०२६ से ११-३-२०२६ के मध्य उल्लासपूर्वक प.पू. लालजी महाराजश्री के अध्यक्षता में और पूरे धर्मकुल के आश्रय में उल्लासपूर्वक मनाया गया।

प.पू. महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री ऐसे उत्सव मनाने के लिये हम सभी को मार्गदर्शन देकर सेवा का मूल्य समझाये है। हम सभी उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करके ओत-प्रोत होगे तो अपना जीवन धन्य हो जायेगा। श्रीजी महाराज के प्रति अपनी निष्ठा दृढ होगी। इसमें शंका का स्थान नही है। ''समैयो'' में जिसने भी धन से, मन से और तन सेवा दिये है। उन सभी के उपर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव अत्याधिक सुखी करें। और पूरे परिवार का शुभ हो। ऐसी श्रीहरि के चरणो में विनम्र वंदना है।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण





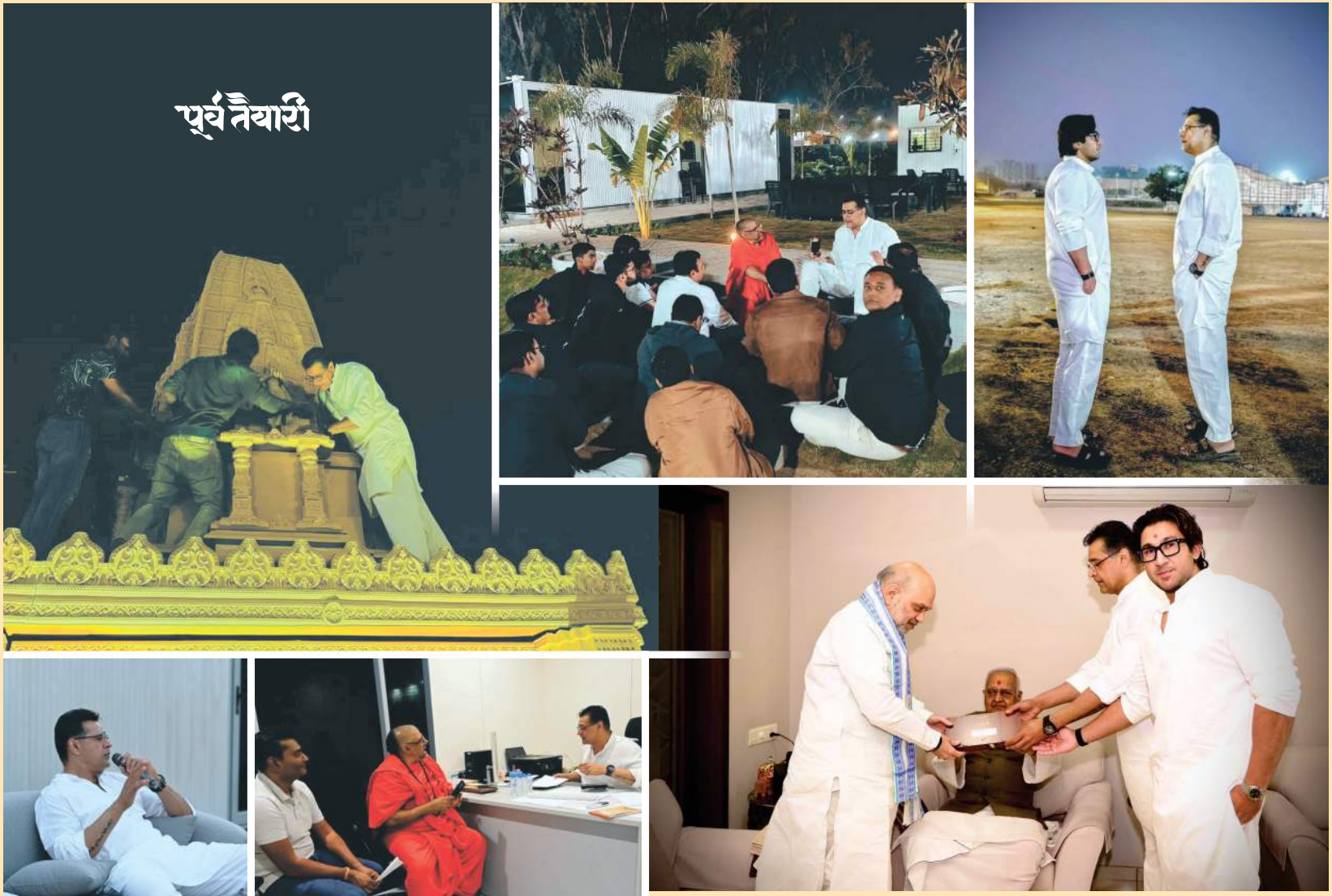


मुक्त शिक्षापत्री जयंती उत्सव









माननीय अमीतभाई शाह के निवासस्थान पर ''समैयो'' का निमंत्रण देते हुए धर्मकुल ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा

(जनवरी-२०२६)

४ भुज-कच्छ श्री स्वामिनारायण मंदिर आयोजीत शिक्षापत्री २०० वर्ष के अवसर पर अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव समक्ष आमंत्रण पत्रिका अर्पण।

४ से ५ वाली (राज.) श्री स्वामिनारायण सत्संग मंडल मुंबई, आयोजीत सत्संग सभा के अवसर पर और भूलेश्वर श्री स्वामिनारायण मंदिर दर्शन करने पधरामणी।

११ ''समैयो'' की संतो के साथ मिटिंग पर कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर पधरामणी।

१३ भारत के माननीय केन्द्रीय गृह मंत्रीश्री अमितभाई शाह के निवास स्थल पर पधरामणी, नारणपुरा।

१४ धनुर्मास धून की पूर्णाहुति के अवसर पर श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में पधरामणी एवं संत महा दीक्षा अपने करकमलो द्वारा संपन्न हुई।

१५-१६ शिक्षापत्री २०० वर्ष के अवसर श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज-कच्छ पधरामणी।

२२-२३ मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर शिक्षापत्री २०० वर्ष के अवसर पर आयोजीत कार्यक्रम और श्री राधाकृष्णदेव के पाटोत्सव महाभिषेक और रंगोत्सव पर पधरामणी।

२३-२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद द्वारा आयोजीत शिक्षापत्री २०० वर्ष के ''समैयो'' अपने शुभ सानिध्य में उल्लासपूर्वक पूर्ण करना, पर्व ग्राउन्ड जमीयतपुरा, परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का महाभिषेक, अन्नकूट आरती स्वयं के करकमलो द्वारा पूर्ण हुइ।

३०-३१ श्री स्वामिनारायण मंदिर भारापर (कच्छ) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा पर पधरामणी।

(फरवरी-२०२६)

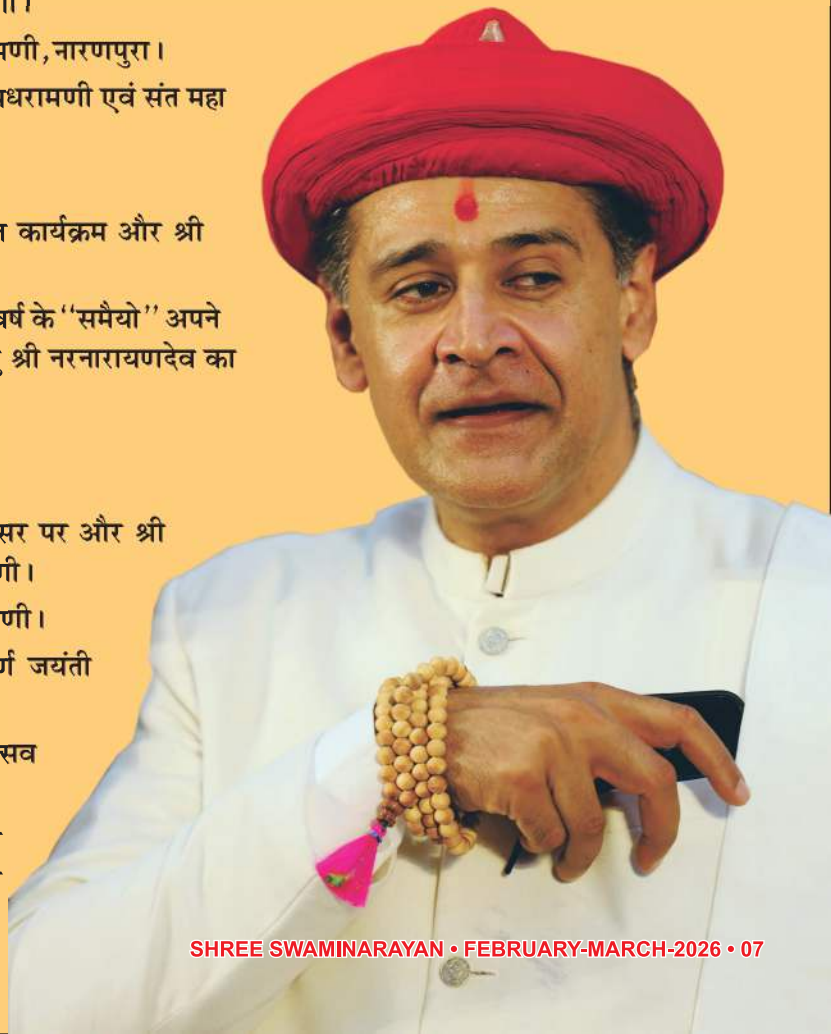
३ थी ९ श्री स्वामिनारायण मंदिर ओकलेन्ड (न्युजिलेन्ड) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर और श्री स्वामिनारायण मंदिर ओकलेन्ड पाटोत्सव और हेमिल्टन सत्संग सभा पर पधरामणी।

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर अरोडा (ईडर प्रदेश) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर पधरामणी।

१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा बाल स्वरूप घनश्याम महाराज के सुवर्ण जयंती पाटोत्सव महोत्सव पर पधरामणी।

२० अहमदाबाद मंदिर में बिराजमान परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के २०४ वे पाटोत्सव महाभिषेक को स्वयं के करकमलो संपन्न हुए।

२२ डांगरवा (वांटो) शताब्दी महोत्सव पर पधरामणी। तथा ''समैयो में सेवा करने वाले स्वयं सेवको-कमिटी के सदस्यो द्वारा अच्छी सेवा के रुप में अपने करकमल से सन्मान किये। ''पर्व'' ग्राउन्ड, जमीयतपुरा।







नई – दिल्ही में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी के साथ प.पू. ला.जी महाराजश्री की शुभेच्छा मुलाकात ।





पूर्व तैयारी





श्री स्वामिनारायण

रुपरेखा

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की

(जनवरी-२०२६)

११ शिक्षापत्री २०० वर्ष की ''समैयो'' की मिटिंग अपनी अध्यक्षस्ता में हुई, कालुपुर मंदिर।

१२ नई दिल्ही माननीय वडा प्रधान श्री नरेन्द्रभाई मोदी के निवासस्थान पर शुभेच्छा मुलाकात हेतु पधारे।

१३ आपने केन्द्रीय गृहमंत्रीश्री अमितभाई शाह के निवास स्थान नारणपुरा में पधरामणी।

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली शिक्षापत्री २०० वर्ष के कार्यक्रम, श्री राधाकृष्णदेव का पाटोत्सव-रंगोत्सव अपने करकमलो द्वारा संपन्न हुए।

२३-२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद द्वारा शिक्षापत्री के २०० वर्ष की ''समैयो'' अपने अध्यक्षता में बडे धामधूम से संपन्न हुए। ''पर्व'' ग्राउन्ड, जमीयतपुरा, परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का महाभिषेक, अन्नकूट आरती अपने करकमलो द्वारा संपन्न हुए।

(फरवरी-२०२६)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर 'पूनम' सत्संग सभा में पधरामणी।

जेतलपुरधाम भगवान को पधारे २०० वर्ष के ''अवसर'' पर आयोजित विजयस्तंभ स्थापन और कंकोत्री लेखन आदि कार्यक्रम अपने करकमलो द्वारा संपन्न हुए।

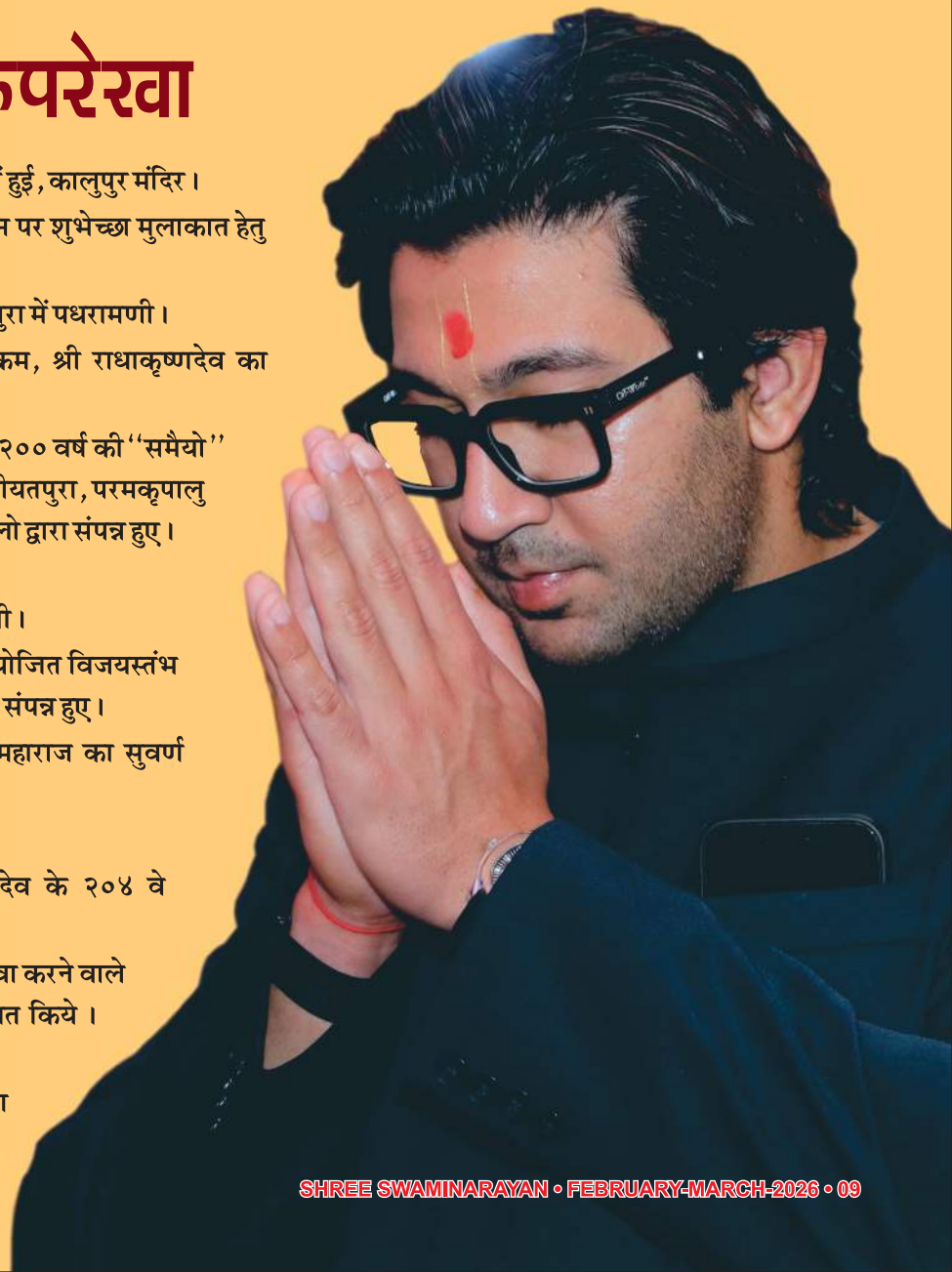
१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा बाल स्वरूप श्री घनश्याम महाराज का सुवर्ण जयंती पाटोत्सव प्रसंग पर पधरामणी।

१९ डांगरवा (वांटो) शताब्दी महोत्सव पर पधरामणी।

२० अहमदाबाद मंदिर में बिराजमान परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के २०४ वे पाटोत्सव महाभिषेक को स्वयं के करकमलो द्वारा संपन्न हुए।

२२ प्रात: मोटेरा श्री स्वामिनारायण मंदिर पधरामणी, ''समैयो'' मे सेवा करने वाले स्वयं सेवको - समिति सदस्यो को अपने करकमलो से सम्मानित किये। ''पर्व'' ग्राउन्ड, जमीयतपुरा।

२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया और श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप में पधरामणी।





मुळी मंदिर उत्सव

शब्द देहे समैयो नी स्मृति

शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी (कोठारीश्री कालुपुर)
- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

सर्वावतारी सर्वोपरी आराध्य भगवान श्री स्वामिनारायण समकालीन नंद संत रचित गद्य-पद्य साहित्य का अध्ययन करते एक सर्व सामान्य सिद्धान्त प्रतिपादित होता है। जीवात्मा को जब प्रगट भगवान की प्राप्ति होती है। पहचान होती है। और भजन-भक्ति होती है। तब जीव, आत्मा का आत्यंतिक श्रेय होता है।

प्रगटने भजी पार पाम्या घणा, गीध मुनिका कपिवृंद कोटी
व्रजतणी नार व्यभिचार भावे तरी, प्रगट उपासना सौथी मोटी
(मुक्तानंद स्वामी)

भगवान जब भी पृथ्वी उपर मनुष्य रुप में प्रगट नही होते है। तब मनुष्यो के आत्यंतिक कल्याण बना रहे। इसके लिये भगवान श्री स्वामिनारायणने तीन गूढ





संकल्प करके तीन रुप में पृथ्वी पर सदैव प्रगट रहते है । (१) देव (श्रीहरि के मूर्तियाँ) (२) धर्मवंशी आचार्य (३) सच्छास्त्र (सं.जी.प्र.-४, अ.-२४)

सभी शास्त्रो का सिद्धान्त अर्थात् सत्संगिजीवन और सत्संगिजीवन सहित सभी शास्त्रो का निचोड अर्थात् शिक्षापत्री । श्रीहरिने संवत १८८२ में समस्त मानव जाति के लिये जीवन जीने की दीपस्तम्भ रुप में शिक्षापत्री अपने हाथो से लिखकर दिये । वह कल्याणकारी प्रसंग की सं २०८२ में वसंत पंचमी का पावन दिन पर २०० वर्ष पूर्ण होने से श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से श्रीहरि के अपर स्वरुप ऐसे अपने धर्मगुरु प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज के शुभ आज्ञा से और समस्त धर्मकुल परिवार के शुभ आशीर्वाद से अपने भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्षपद स्थान तथा उनके पूरे मार्गदर्शन में मानवजीवन का कल्याणकारी समैयो ता. २३-१-२०२६ से २७-१-२०२६ तक "पर्व" ग्राउन्ड, प्रभा हनुमानजी मंदिर के पास, जमीयतपुरा, अहमदाबाद में हजारो संत और हरिभक्तो की उपस्थिति में जीवन के एक अविस्मरणीय भव्यता और दिव्यता मनाये ।

हम सभी समैयो प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रुप से देखे । तो भी "शब्द देह" से फिर एक बार मिले ।

पूर्व तैयारी (श्रमयज्ञ) : श्रीहरि के समय श्रमयज्ञ में भाग लेने वाले भक्तजनो के उपर श्रीहरि इतना खुश हुए कि भक्तो के मिट्टी वाली शरीर को आलिंगन करते थे । इसी परम्परा से श्रीहरि को खुश करने के उद्देश्य से जहाँ पर मैदान के अलावा कुछ भी नही था । ऐसी २०० बीघा की खुली जमीन मे मात्र ३८ जितने दिनो में प.पू. महाराजश्री के पूरे मार्गदर्शन के अर्न्तगत संतो-हरिभक्तो के अथक परिश्रम से जमीन साफ करके उस पर कार्पेट लगाकर सजाये थे । शेष भूमि पर आयौजन पूर्वक डिजाईन से हरियाली और सुगंधित पुष्पो वाले हजारो पौधे लगाकर उसकी पानी तथा खाद से विकसित किया गया । इस प्रकार एक आध्यात्मिक नगर जैसा संकुल तैयार किया गया । प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. महाराजश्री प्रतिदिन ग्राउन्ड पर आकर प्रकल्प का नक्शा इत्यादि अपने हाथो से डिजाईन करके मार्गदर्शन देते थे । प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री तथा पू. श्रीराजा भी समय निकालकर ग्राउन्ड पर आते थे । रहने तथा बच्चे भी इस श्रम यज्ञ मे भाग लिये थे । पूरा संकुल सुंदर डिजाईन, रंगोली, ध्वजा, पताका और लैम्प से सजाया गया था ।

महोत्सव के मध्य सेवा करते अलग-अलग प्रकार की ३० समिती के नीचे कुल ४५०० स्वयं सेवक जुडे थे । जिन्होने निष्ठापूर्वक श्रमयज्ञ करके समैयो का सफल बनाये थे ।



ग्राउन्ड के प्रकल्पो का विंहगावलोकन समैयो का शब्दो मे वर्णन नही हो सकता है। इसके बाद भी शब्द देह के माध्यम से स्मृतियो को ताजा करे।

(१) मुख्य द्वार : परिसर के मुख्य द्वार अपने ऐतिहासिक कालुपुर मंदिर के मुख्य द्वार की हूबहु प्रतिकृति समान बनाया गया था। द्वार के सामने पानी का एक कुंड और चारोतरफ छोटे कुंड से नयनारम्य पानी का फुहारा बनाया गया था। मुख्य द्वार से प्रवेश करते कालुपुर मंदिर के दरवाजा में से प्रसार हो रहे है। ऐसी अनुभूति होती है।



(२) धून मंडप :

जो स्वामिनारायण नाम लेगा। उसके सभी पाप....

महोत्सव के पहले २१२ घंटे से और २१२ मिनट की धुन तो धुन तो बहुत हो गया। उसको मानने के लिये ३६ घंटे की धुन (३ दिन प्रातः ७ बजे से ७ बजे तक) प्रभा हनुमानजी के मंदिर के पास के अपने हरि मंदिर में ठाकुरजी के सानिध्य में की गयी थी। अहमदाबाद शहर और सम्प्रदाय की भाषा के अनेक प्रकार के अन्य देशो के हरिभक्त ने श्रीरि की मूर्ति को सम्भालकर धुन की थी।

जो अंत काले श्रवणे सुणाय, पापी घरणो ते पण मोक्ष थाय, अंतकाल में 'स्वामिनारायण' महामंत्र सुनने को मिले या न मिले। महोत्सव को आने वाले दर्शनार्थी प्रथम हनुमानजी और मंडप में आने वाले श्रवण इन्द्रिय द्वारा इस पापनाशक महामंत्र प्रत्येक के अन्तकरण में प्रवेश करता है।

(३) यज्ञशाला : श्रीहरि ने शि.प. श्लोक नं. ९३ में श्री विष्णु सहस्त्रनाम को हितकारी कहकर श्लोक नं. ११८ में मनोवांछित फल की प्राप्ति के लिये। अपने शक्ति के अनुसार उसके पुरश्चरण करने की आज्ञा किये है। इसी आज्ञा के



अनुसंधान में यज्ञशाला में अपने आराध्यदेव श्रीहरि के जिस में १००० मंगलकारी नाम है। ऐसी एक दिवसीय सर्व मंगल नामावलि के साथ १०८ कुंडी यज्ञ का आयोजन किया गया था।

बिना लोहे के उपयोग से केवल लकडी एवं बास से पूरे वैदिक रुप से मुख्य वेदिका पर श्री नरनारायणदेव की स्थापना वाली सुशोभित विशाल १०८ कुंडी यज्ञ शाला में तीन दिन से ३७५ यजमानश्री बैठकर वैदिक यज्ञ का दिव्य लाभ लिये थे।







(४) महापूजा कुटीर : श्रीहरिने शि.प. श्लोक नं. ७७ में अपने आश्रितो को पंचामृत स्नान करके भगवान के महापूजा करने की आज्ञा किये है।

शिक्षापत्री की ''समैयो'' होने कारण श्रीहरि का स्वरुप ऐसी शिक्षापत्री सहित शिक्षापत्री लेखन करते श्रीहरि के मूर्ति को महापूजा आयौजन किया गया था। श्री नरनारायणदेव के मुख्य स्थापन के साथ ही इस कुटी रमें कुल १२०० यजमानश्री स.गु. गोपालानंद स्वामी रचित महापूजा का दिव्य लाभ लेकर श्रीहरि सहित धर्मकुल, नंद संतो, पार्षदो, कान्तिक भक्तो इत्यादि को खुश किये थे।

(५) मंत्र कुटीर : अन्दर चारो तरफ श्री स्वामिनारायण मंत्र से अंकित और विविध शुभ चिन्हो से अंकित छत वाली सुशोभित मंत्र कुटीर की मुख्य वेदिका पर श्रीहरिने दो वांगमय स्वरुपो की फोटो कापी रखी गयी है। जिसकी मूल कापी का चिंताकन वेदांताचार्य स.गु. शा. स्वा. निर्गुणदासजी (असारवा)ने किया है। जो असारवा गुरुकुल मंदिर में दर्शन देते है। ४ X ८ फुट साईज की यह दोनो मूर्ति मिलकर उसने ५०० परमहंसो मे नंद संतो द्वारा लिखित श्रीमद् सत्संगीजीवन प्रत में से ५ प्रकल्प के ३६० अध्यायो में से १७८६१ श्लोक लिखे है।

कुटीर के मध्य भाग में पिरामिड की रचना से भक्तजनोने श्री स्वामिनारायण महामंत्र लिखी लगभग १५००० नोट बुक जिस में लगभग १७ करोड जितने महामंत्र समावेश होता है। उसे रखा गया था।

(६) गौ-शाला : हिन्दु संस्कृति में गाय का अति महत्व है। यज्ञ में गाय की गोबर की आहुती दी जाती है। और ठाकुरजी के सामने गाय के घी का दीपक उत्तम माना जाता है।

गाय और ग्राम्य संस्कृति की विशेष महिमा समझने के लिये गौ-शाला में अपने मंदिर की तीन गीर गाय और दो बछड़ी का दर्शन होता है। ग्राम्य संस्कृति की झाँकी देखने के लिये। एक ग्रामीण घर की रचना करके आँगन में एक प्राचीन बैल की गाडी रखी गयी थी। घर के पीछे औऱ बगल में एक नीम का पेड, घर की छाया और वातावरण को प्रदूषित रहित रखता है।

दर्शनार्थीयोने गीर गाय की पूजा किये। हरी घास का चारो खिलाया। गौ-शाला की प्रदक्षिणा किये थे। दर्शन करते कुछ क्षण तो ऐसा लगा कि शुद्ध हवा और गाय का शुद्ध पवित्र घी दूध के लिये गाँवो में रहना चाहिए।

(७) वेदशाला : शि.प. श्लोक नं.१३ में आठ सच्छास्त्र में से ४ वेद का सर्व प्रथम वर्णन है। चार वेद सर्व सच्छास्त्रो का मूल है। इसकी महिमा समझने के लिये वेदशाला की सुंदर रचना करके मध्य भाग में अति मनोहर वेदिका की रचना करके आसन पर ख्याल भगवान तथा सुंदर बाजोट पर श्रीमद्



भागवत पुराण ग्रंथ रखा गया था। मध्य से चारो दिशा में चार दिशा में चार मनोहर कुटीर की रचना करके उसमें श्रृगवेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की मूर्तियाँ तथा ग्रंथ रखे गये है। और कुटीर के बगल में उस वेद की परिचय अपने अच्छे लिखावट में बोर्ड लगाया गया था।

वेदो का पूजन और तीन दिन में वेद का पारायण गुजरात और् अन्य राज्यो के विद्वान ब्राह्मण द्वारा किया गया था। व्यास भगवान के पीछे भाग मे १८ पुराण मंदिर की रचना करके उसमें अनेक पुराणो को रख कर सामान्य परिचय वाला बोर्ड लगाया गया था।

(८) आचार्य स्थापन मंदिर :

तहा आव्या पछी कृपानाथ, बेउ पुत्र तणा ग्रही हाथ;
तेने वेद विधी अनुसार, सोंप्या गादी तणा अधिकार.
उभा पश्चिमाभिमुख नाथ, पाट दक्षिणमां डाबे हाथ;
तहां बेसार्या श्री रघुवीर, जाणी धर्मधुरंधर धीर.
पासे उत्तरमां बीजी पाट, मांडेली बीजा पुत्रने माट;
त्यां अयोध्याप्रसाद बेसार्या, महा धर्मधुरंधर धार्या.

(श्रीहरि लीलामृत-४, कलश-८, विश्राम-४६)



आचार्य स्थापन को भी २०० वर्ष पूर्ण होने पर धर्मवंशी आचार्यश्री के बारे में ज्ञान देने वाला श्लोक नं. ४१, ६२, ७१, ७२, १२८, १३३ इत्यादि शिक्षापत्री में समाविष्ट होने से उसका अलग से उत्सव नही मानते ''समैयो'' में ही एक भागरुप में आचार्य स्थापन सर्कल में छत्री करके वेदिका पर उपरोक्त वर्णन अनुसार श्रीहरि, आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री (अहमदाबाद देश) तथा आदि आचार्यश्री रघुवीरजी महाराजश्री (वडताल देश) के मूर्तियो को पधराया गया है।

..... गुरु परंपरा जाणी जोईए, ते केवी रीते तो..... अने अमारा धर्मकुळनुं स्थापन कर्युं छे तेनी रीत जाणवी... - भगवान श्री स्वामिनारायण (व-१८)

जिसे कल्याण का ज्ञान हो। यह परम्परा बनाये रखे। कल्पित परम्परा के बोध से दूर रहे।

(९) A.I. टेक्नोलाजी बेस से शिक्षापत्री का प्रदर्शन : A.I. अर्थात् आर्टीफेसीयल इन्टेलीजेन्स अर्थात् कृत्रिम बुद्धिमत्ता, बेस अर्थात् आधार और प्रदर्शन, पूरे प्रदर्शन में **A.I.** के उपरांत **A.R.** और **3D** टेक्नोलाजी का उपयोग किया गया था। यह प्रदर्शन लाखो लोग देखे थे। देखने वाली की लम्बी कतार थी।











કોડ ઓફ લાઈટ











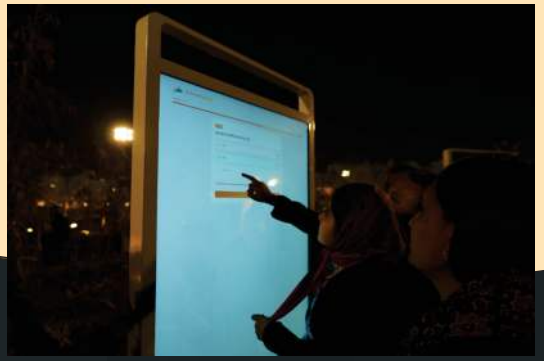
अन्तिम दिन भी देर रात तक खुला रखा गया था। प.पू. लालजी महाराजश्री की सूझबूझ से प्रदर्शन में मूल स्वामिनारायण सम्प्रदाय के सभी शास्त्रो के सार का समावेश हो जाना था। प्रदर्शन के डोम पर **Code of light A Digital perience** ऐसा आंग्ल भाषा में बोर्ड था। जिसका गुजराती भाषा में अर्थ डीजीटल दुनिया में प्रकाश रंग और डेटा के संयोजन से बना आकर्षण और स्पष्ट यूजर अनुभव जैसा हुआ था। इस डीजीटल टेक्नोलाजी द्वारा जीवन में सकारात्मक, ज्ञान और उच्च ऊर्जा लाने से सम्बन्धित है।

पूरे प्रदर्शन की संरचना जर्मन डेन्गर डोम अर्थात् एल्युमिनियम धातु से बना एक विशाल मजबूत अस्थायी संरचना थी।

वर्तमान समय में युवको की साहित्यिक रुचि कम हो गयी है। तब समय अपने साथ चलता नही लेकिन हमें समय के साथ चलना पडता है। इस तरह टेक्नोलोजी के माध्मय से रीयल टच के साथ समैयो के लिये यह **Exhibition** से सिद्ध हुआ है। जिसके लिये चार ओडोटोरियम, दो हाल और दो गैलरी की रचना की गयी थी।

अंत में विशाल शिक्षापत्री डोक्यूमेन्टरी (दस्तावेजवाली फिल्म) ओडोटिरयम में "हमारी शिक्षापत्री" इस ट्रायल से एक परिवार में शिक्षापत्री के कारण हुए बदलाव अर्थात् प्रभावीशाली रुप में प्रस्तुत किया गया था। वह विडियो फिल्म देखकर कई लोग अपने घर में स्क्रीन पर दिखाये थे। एक पक्के पूठ्ठेवाली "समैयो" लिखकर शिक्षापत्री भाष्य अर्थ दिपिका टीका रखने की चाहत पैदा हुई। इसकी माँग साहित्य केन्द्र के उपर थी। यह प्रदर्शन लगभग १५ लाख लोगो ने देखा था।

(१०) बाल नगरी : बालको के खेल-कूद साथ भगवान की पहचान तथा धर्म का ज्ञान हो। इस उद्देश्य से बालनगरी में श्रीहरि का वनविचरण, गुफा, हिमालय, तपस्या करते श्री नीलकंठवर्णी, पानी की धारा. नरनारायणदेव की







धार्मिक स्विज-ज्ञान शोध हेतु चार बड़े मोबाईल उपरकरण के माध्यम से डिजीटल प्रस्नोतरी का प्रबन्ध किया गया था।

(११) स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प : शि.प. श्लोक नं. १३६ में रोगातुर मनुष्यो की सेवा करना, इस आज्ञा को लक्ष्य में रखकर इस विभाग में ९ विशेषज्ञ डॉक्टरो द्वारा कुल १२८३ रोगीयो का निरीक्षण औषधि सहित नि:शुल्क किया गया था।

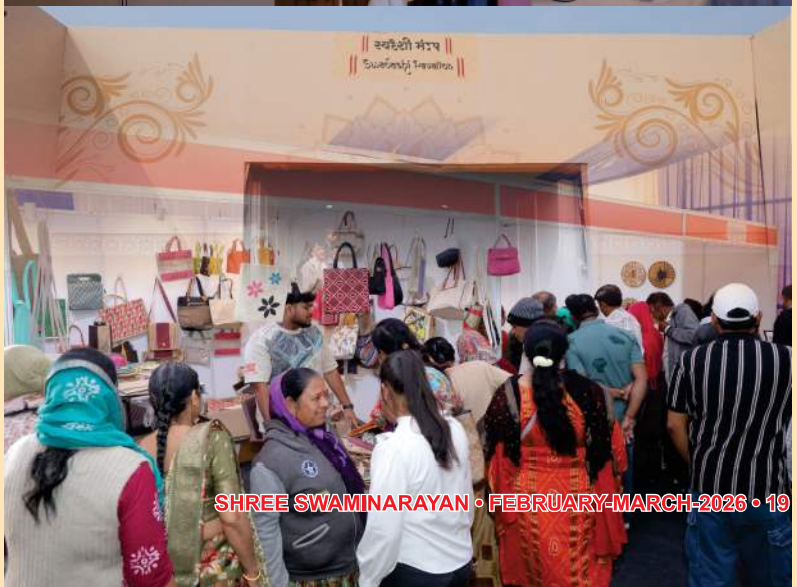
(१२) स्मृति केन्द्र : इस केन्द्र पर से समैया की स्मृति रुप समैया लिखी अनेक जीवन जरुरी वस्तुए विक्री की गयी।

(१३) स्वदेशी प्रोडक्ट केन्द्र : इस विभाग में स्वदेशी निर्मित वस्तुओ की विक्री के लिये योग्य स्थल के लिये १४ स्टाल रखा गया था। इस में आयुर्वेदिक हेल्थ प्रोडक्ट, खाद्य पदार्थ, आवश्यक जीवन जरुरी सामान तथा बड़े साधन में इलेकट्रीक मोटर सायकिल भी रखी गयी थी।

एक काउन्टर गोधार्मिक का भी था। जो मानव सेवा करते है। तथा दूसरे







को जोडने का प्रयास करते है । अपने लिये गौरव की बात है । गो धार्मिक के राजदूत (दूतावास के प्रतिनिधि) के रुप में अपने भावि आचार्य प.पू. व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री आशीर्वाद और साथ उन्हे मिला है । गौ धार्मिक और अपने कालुपु रमंदिर में मानव सेवा के इस कार्य को विश्वभर में पैला रहे है ।

(१४) शिक्षापत्री दर्शन : प.पू. महाराजश्री की प्रेरणा से इस स्थान में प्रसादी के शिक्षापत्री का सभी को दर्शन के लिये और फोटोग्राफी (सेल्फी पोईन्ट) स्मृति के लिये रखा गया है ।





मैदान के बीच में ग्रीनरी – फूल के पौधो के मध्य कालुपुर मंदिर की प्रतिकॉति और् समैयो लिखा प्रतीक रखा गया है ।

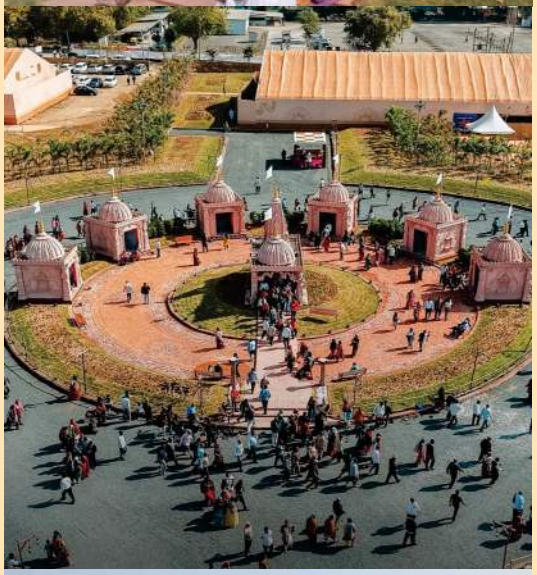
(१५) सभा मंडप : प्रत्येक महोत्सव का मुख्य भाग सभा मंडप होता है । सभी विभाग का दर्शन करने के बाद मनुष्य का मन सभा मंडप में बैठकर कथा श्रवण करे । तब उसे शांति और आराम मिलता है । कथा–वार्ता के द्वारा मानव मे



अच्छे गुण आते है । इस लिये विशाल मंडप में सोफा और् कुर्सियो पर बैठकर लाखो श्रोतागण ने नित्य स.गु. महंत शा. स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी (कांकरिया) तथा स.गु. महंत शा. स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल–जमीयतपुरा) के मुख से सुंदर संगीत मय शैली में संस्कृत के श्लोको तथा स.गु. निष्कुलानंद स्वमी रचित ''शिक्षापत्री भाषा'' की चौपाईयो के साथ शिक्षापत्री भाष्य की कथा श्रवण किया गया था । कथा के अर्न्तगत रासोत्सव भी मनाया गया था ।

कालुपुर मंदिर की हवेली की प्रतिकृति से शोभित सभा मंडप का प्रवेश द्वार तथा विशाल स्टेज था । जिस पर हरि मंदिर के प्रसादी का सिंहासन तथा शिक्षापत्री रखी गयी थी । कथा के मध्य १०८ संहिता पाठी पवित्र ब्राह्मणो ने श्री







स्वामिनारायण भगवान और नंद संतो द्वारा रचित शिक्षापत्री संग्रह का संहिता पाठ किये थे।

(१६) शिक्षापत्री मंदिर और पंचदेव मंदिर : मुख्य मंदिर में श्रीहरि का चित्र लेखन करती पटमूर्ति तथा रजत जयंति (चाँदी के परत से प्रिन्ट की गयी) शिक्षापत्री तथा चारोतरफ ६ मंदिरो में क्रमशः श्रीगणपतिजी, श्री अंबाजी, श्री नरनारायणदेव, शिवपार्वतीजी, श्री सूर्यनारायण और श्री हनुमानजी रखे गये थे। प्रत्येक स्वरुप का चल स्वरुप में प्रतिष्ठा होने के कारण पूजारी ब्राह्मणो द्वारा पूजा आरती और थाल किया गया था। सर्कल में शि.प. श्लोक नं. ८४ (पंचदेव के विषय में) सुंदर बोर्ड पर लिख कर रखा गया था। इस मंदिर का सर्कल समैयो का हृदय तुल्य भाग था।

(१७) सोलर फार्म : पूरे सभा मंडप में बिजली की पूर्ति इस सोलर फार्म से की गयी थी। पूरे संकुल का कचरा ग्राउन्ड से बाहर ले जाकर वेस्ट रिसाकिल पद्दति से निकाल किया जाता था। इससे पर्यावरण की सुरक्षा का संदेश इस समैयो में लक्षित होती है।

(१८) आर्गेनिक फूड कोर्ट : आर्गेनिक खाद्रय पदार्थो के लिये ग्रीन रस, फल का रस (फलो का गाढ़ा पेय) शोटस, सुप, शेक, मील बाडल, चार सैन्डवीच इत्यादि के लिये काउन्टर बनाया गया था।

(१९) साहित्य केन्द्र : आराध्य देव के चरित्र का शास्त्र तथा शास्त्र तथा अपने सम्प्रदाय की विधि का शास्त्र सम्प्रदाय की पुष्टि करता है। (ग.म.





५८) साहित्य केन्द्र में शिक्षापत्री की माँग अधिक रही। सौजन्य भेट से अपने श्री स्वामिनारायण मासिक के १५० जितने साथ बने।

(२०) भोजनालय : विशाल आठ भोजनालय



रात्री सांस्कृतिक कार्यक्रम















में बँटा भोजनशाला में पाँच दिन तक लाखो लोगो ने प्रसाद ग्रहण किया। प्रातः ब्रेक फास्ट, दोपहर में लंच, और शायं मे डीनर, निष्कुलानंद द्वारा रचित हरि स्मृतिः के मध्य चिंतामणी। भोजन करते देखे है। इस चौपाई के सुनने के साथ सभी भक्तगण भोजन प्रसाद खाये। ऐसी व्यवस्था धीरे धीरे श्रीहरि का स्मरण होता था। भोजन भी कई प्रकार के, अनेक प्रकार के व्यंजन.... इस पंक्ति के अनुसार समैयो मे भी थाली मे ये नही। इतने मिठाई तथा भोजन खाकर लोग तृप्त हुए।

(२१) सांस्कृतिक प्रोग्राम : इस स्टेज पर ता. २३ से २५ तीन दिन एक, क्रमशः लोकप्रिय कलाकार आदित्य गढवी, गरबा करके, अतुल पुरोहित और भजन से युवा दिल जितने वाले हार्दिक दवे का रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम को लाखो लोगो ने देखा था। स्टेज पर होलीग्राफी टेक्नोलोजी से शो किया गया था। 3D प्रतिबिंब बनाने वाली तकनीक। नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन को आज के संगीत ट्रेन्ड पर गाये थे। ता. २६-१-२६ को 'सहजानंद चरित्र' श्री स्वामिनारायण भगवान के चरित्रो की संगीतमय आधुनिक प्रस्तुति मे लाईव मेगा शो किया गया था। १५० से अधिक कलाकारो ने म्युजिकल एलबम लांच किये थे।

(२२) विश्राम विभा (उतारा-विभाग) : यु.एस.ए., आफ्रिका, आस्ट्रेलिया, लंदन (यु.के.) न्यूजीलैण्ड इत्यादि देशो से अधिक संख्या में NRI हरिभक्त ''समैयो'' मे भाग लेने आये थे। NRI सहित देशा-देश के सभी हरिभक्तो के लिये अच्छे सुविधा युक्त विश्राम की व्यवस्था की गयी थी।





अहमदाबाद के अपने प्रत्येक मंदिर से हरिभक्तोने समैयो में लाने के लिये ५० बस AMTS बस फ्री में व्यवस्था की गयी थी।

टाईटल साँग : समैयो का शीर्षक उत्सव गीत जो प्रत्येक के हृदय मे बस गया। वह लिखकर गर्व ''समैयो'' के अंगभूत कार्यक्रमो की स्मृति को ताजा कर देती है।

ए कालुपुर धामनो ने नरनारायणदेवनो समैयो.... ये हे समैयो.... ए शिक्षापत्री शास्त्रनोने ज्ञान केरी धारनो समैयो... ये हे समैयो.... ए जी सहुना रे हरखनो बसो रे वरसनो (२) ये हे समैयो... स्वामिनारायण नाम केरो आनंद आज आयो रे समैयो.... ये हे समैयो ..... ए नरनारायणदेव आप्या दर्शनने काज (२) भक्ति धर्मना कुळ दिपाव्या भक्तोने काज, प्रगट परचा पूरनार ए छे मोक्ष दातार (२) जीवनरूपी सार ने कल्याणना आधारनो समैयो... ये हे समैयो .....आवी वसंत पंचमी तिथि रूडी आज, आपी पावन शिक्षापत्री सत्संगने काज (२) सर्व शास्त्रनो ए छे सार, एनो महिमा अपरमपार ज्ञान केरी धारनो ने जीवना उध्धारनो समैयो.... ए हे समैयो... शिक्षापत्रीनो सार अनेरो, मानव जीवन सुरवतणी जन दुःख हारी अति सुरवकारी अनंत अपार उपकारी, जे जन रहेशे एना वचने एनी टळशे जग जंजाळ, अंते जाशे अक्षरधाम ए छे समैयानो सार (२)

यह टाईटल सोंग इतना लोकप्रिय हुआ कि पूरे समैया में अधिक गाया गया था। आदित्य गढवी इत्यादि कलाकार भी गाये थे।


महापूजा


महिलासंग


आत्मसंयम


श्री स्वामिनारायण महामंत्र
अखंड धून
समैयो
श्री स्वामिनारायण महामंत्र
अखंड धून



प्रथम दिन : ता. २३-१-२०२६ को प्रातः ५-३० बजे मूली श्री राधाकृष्णदेव की मंगला आरती से समैयो का प्रारम्भ किया गाय । वसंत पंचमी होने के कारण श्री राधाकृष्णदेव का पाटोत्सव तथा शिक्षापत्री के २०० वर्ष का समैयो होने से मूली मंदिर में समूह महापूजा, हरियज्ञ, त्रिदिवीसीय श्री शिक्षापत्री भाष्य की कथा का प्रबन्ध किया गया । इस अवसर पर अहमदाबाद तथा जेतलपुर इत्यादि धामो धाम से संत लोग पधारे थे।

पंचोपचार पूजा, देवो का महाभिषेक, श्रृंगार आरती, अन्नकूट आरती, शिक्षापत्री की पूजन-अर्चन, समूह वाचन और प्रसंगोचित सभा पूर्ण की गयी । पूरे धर्मकुल की उपस्थिति से पूरा झालावाड हालार देश के भक्त भाव विभोर हुए थे । प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. महाराजश्री सभी को आशीर्वाद दिये थे।

प.पू. लालजी महाराजश्रीने वसंत के स्वागत रुप में रंगोत्सव करके भक्तगणो की भीड को केसुडा रंग से तरबोल किये थे । टाईटल सोंग, मूली राधाकृष्णदेव के कीर्तन, महामंत्र की धुन इत्यादि साथ रंगोत्सव की धुम मची थी । महिला भक्त तो रासोत्सव की थी।

भारतीय वैदिक परम्परा के अनुसार दोपहर के २ बजे से प्रभा हनुमानजी मंदिर से शुरु हुई पोथीयात्रा संतो तथा हजारो हरिभक्तो के साथ उल्लास के साथ ४ बजे समैयो के मुख्य द्वार तक थी । जो दर्शन किये । वह मानस पट पर अविस्मरणीय बनी।

उत्सव के चल स्वरुप श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में सैकडो संत और हजारो हरिभक्तो की उपस्थिति में वेद मंत्रो की ध्वनि और स्वस्तिवाचन के साथ ढालकी आवाज के साथ रंगारंग कार्यक्रम से प.पू. महाराजश्री सहित पूरे धर्मकुल परिवार की उपस्थिति में प.पू. लालजी महाराजश्री ने पूजा की थी । श्री राजाने रीब खोलकर महोत्सव के मुख्य प्रवेश द्वारा का उद्घाटन किये थे।



पार्षदो द्वारा धारित लाल छत्री और आचार्यश्री के प्रतीक सभी लाल पगडी से शोभायमान प.पू. महाराजश्री की अच्छी शोभायात्रा के साथ जिस में १-२ ढोलीयो मैदान में राजमार्ग के दोनो तरफ लाईन से ढोल बजाते हुए। प्राण से प्यारो रे मुने यह गीत संगीत के साथ ताल मिलाते, स्ऐसे अनेक आकर्षक और शोभा के मध्य प.पू. महाराजश्री सभी के साथ धीरे धीरे आचार्य स्थापन मंदिर में पहुँचे थे। यहाँ पर आरती पूजा करके सभी को दर्शन के लिये खोले थे।

इसी प्रकार वसंत पंचमी तिथि को यही..... यह टाईटल सोंग धुन के साथ पू. श्रीराजा के करकमलो द्वारा AI तकनीक के आधार पर शिक्षापत्री मंदिर में श्रीमद् शिक्षापत्री की आरती की गयी।

बाद में आतिशबाजी और वेदोक्त मंत्रो के साथ उत्साह प्रेरक वातावरण में प.पू. महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री रीब खोलकर सभा मंडप के प्रवेश द्वार का उद्घाटन किये थे।

शिक्षापत्री के टाईटल सांग के साथ सभा मंडप में सभी का भावपूर्वक अभिवादन करते, संत मंडल और पोथीधारक यजमानो के साथ मंच पर पधारकर सिंहासन में विराजमान ठाकुरजी तथा चरणारविंद की अर्चना पूजा करके, संगीतज्ञ टीम द्वारा गाते आज अनुयम दिवस सखी.... इस कीर्तन की लाईन के साथ दोनो स्वरुप विराजमान हुए। १०८ पोथियो को निज स्थान पर स्थापना हुई। इतने में कालुपुर मंदिर के महंतश्री पू. पी.पी. स्वामी गुजरात राज्य के सम्मानित मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल के सामने जाकर सन्मान पूर्वक मंच पर लाये। श्रीहरि के दोनो स्वरुप खडे होकर उनका अभिवादन किये। प.पू. महाराजश्री उन्होने ठाकुरजी सिंहासन और मंच की प्रसादी की शिक्षापत्री संक्षिप्त परिचय कराके दर्शन कराये थे।



श्रीहरि के दोनो स्वरुप, मुख्य मंत्रीश्री, अग्रणी संत गण और यजमानश्री साथ रहकर शत शत दिप जले.... कीर्तन की लाईन के साथ मंगलदीप को प्रज्वलित किये थे । इसके बाद श्रीहरि के दोनो स्वरुप मुख्यमंत्री का यथोचित स्वागत सम्मान किये थे । धर्मकुल के शुरुआती आशीर्वचन और मुख्यमंत्रीश्री के मंगल उद्‌बोधन के बाद भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी का विडियो संदेश सभाजनो को सुनाया गया था । वे मूल सम्प्रदाय अहमदाबाद की गद्दी द्वारा किये गये सभी प्रकार की सेवा की प्रशंसा किये । पोथीपूजन, वक्ताश्री का पूजन और आरती के बाद कथा मंगल की शुरुआत की गयी ।

द्वितीय दिन : श्रीहरि के दोनो स्वरुप अन्य सभी विभागो में पधारकर उद्‌घाटन विधि पूर्ण किये थे । प.पू. लालजी



महाराजश्री ने महापूजा कुटीर तथा यज्ञशाला के मुक्य स्थापन पर ठाकुरडी का पूजन-आरती करके शुभारम्भ किये थे । श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप पूरे महोत्सव में जहाँ पर कुछ कमी थी । वह पूर्ण करके स्वयं सेवको का उत्साह बढाये थे । मुलाकात के समय ग्राउन्ड पर गोल्फ गाडी में बैठकर प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा तेजी से चलकर प.पू. महाराजश्री का दर्शन अविस्मरणीय था ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के प्रेरणा से कालुपुर मंदिर तथा अपने (ISSO) ह्युस्टन मंदिर द्वारा तैयार और प्रसिद्ध कलाकारो द्वारा गाये तो दो कीर्तन अल्बम जिस में प्रथम प्राण से प्यारे रे मुनि..... और दूसरा मारा व्हालाजी रहु वालप.... ए दोनो डिजीटल एल्बम प.पू. लालजी महाराजश्री ने पू. महंत स्वामी और ट्रस्टियो के साथ रहकर लोचिंग किये थे ।

इस दिन दोपहर मे विराम के समय मे १ घंटे हेल्थ विशेषज्ञ तथा प्रसिद्ध चिकित्सको द्वारा लाइफ स्टाईल हेल्थ सेमीनार रखा गया थआ । इस कार्यक्रम को देखकर सभी हेल्थ के विषय में जागृत हुए ।

तृतीय दिन : अपने देश के संरक्षको, आर्मी, नेवी, वायुसेना, पोलिस इत्यादि के प्रतिनिधि स्वरुप में सेनापति, कैप्टन, हवलदार, पोलिस के नायक तथा सेना से निवृत्ति प्रत्येक का अभिवादन किया गाय था । तीनो अपर स्वरुपो ने



अभिवादन किया था । बहनो के विभाग में प.पू. गादीवालाश्री के करकमलो द्वारा किया गया था । देश के लिये शहीद ११ परिवार को १,११,१११/- की सहायता अपने कालुपुर मदिर से की गयी थी । जिस में एक परिवार को ५१०००/- का अनुदान प.भ. शुभम पी. गेलाणी (दुबई) द्वारा किया गया था । अंत में सभी लोग खडे होकर ए मेरे वतन के लोगो ..... के गीत द्वारा शहीद वीरो को श्रद्धाजलि दी थी ।







दोपहर मे आराम के समय प.पू. गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से १ घंटे तक महिला मंच का आयोजन पू. श्रीराजा और पू. बिन्दुराजा ने दीप प्रगट किये थे । बालिकागुणो ने हनुमान चालिसा के शब्दो के साथ यथोचित आरोह-अवरोह सहित सुदंर नृत्य प्रस्तुत किया गया था । कालुपुर मंदिर की युवती बहनोने आधुनिक युग मे शिक्षा पत्री के लाभ को सुंदर नाटक के रुप में समझाया था । सभा मंडप मे हाजिर सभी बहने भाग ले सके । इस प्रकार शिक्षापत्री का गेम खिलाया गया था । महिलाओ एवम् बच्चियो द्वारा अनेकगीत के साथ नृत्य अंत में टाईटल सांग के साथ नृत्य के कार्यक्रम की पूर्णाहुति की गयी थी ।

दोपहर सेशन के बाद वैष्णवाचार्य तिलक बावाजी गोस्वामी मधुसुदन लालजी महोदय श्री पधारे थे । आप .पू. बड़े महाराजश्री को खेश, हार पहनाकर स्वागत किये थे । आप का यथायोग्य सम्मान किया गया था । समैयो के उइपलक्ष्य में कालुपुर मंदिर द्वारा चित्र स्पर्धा के विजेता कलाकारो का सम्मान किया गया था ।

चतुर्थ दिन : आज २६ जनवरी अपने देश का गणतंत्र दिवस होता है । राष्ट्रभाव भाव से सभी लोग खडे होकर राष्ट्र गान जन गण मन.... का गान किये थे । भारत माता की जय कहा गया था । युवा वैष्णवाचार्य गोस्वामी १०८ श्री शरणमकुमार महोदयश्री पधारे थे । आपश्री का साल, खेश, तथा मूर्ति अर्पण करके तीनो हरि के अपर स्वरुपने सम्मान किये थे । अपने अग्रण्य संतो ने भी सम्मान किया था ।

आज पू. महाराजश्री शुभ वैवाहिक जीवन का एनिवसरी डे । सभा संचालकश्री शुभ भावना के साथ गाजे-बाजे के साथ सम्प्रदाय के नियमानुसार प.पू. महाराजश्री और प.पू. गादीवालाश्री परस्पर हार पहनाये थे ।

समैयो का लाभ लेने हेतु आयो देश के NRI भक्तजन ने श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप के चरणो में बैठकर फोटो सेशन किये थे ।

दोपहर के आराम वाले समय में डेढ घंटे अहमदाबाद शहर के पूर्व पश्चिम श्री नरनारायणदेव बाल मंडल के बालकोने सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम किये थे । लडको ने अंग्रेजी और गुजराती भाषा में कार्यक्रम का अच्छा संचालन किये थे । सर्व प्रथम नृत्य के साथ गणेशवंदना की गई थी । संवाद द्वारा शिक्षापत्री की महिमा, उत्सव की आवश्यकता तथा मुझे मोबाईल बनना है । इस शीर्षक से स्पीच धारा मोबाईल का उपयोग - दुरुपयोग,



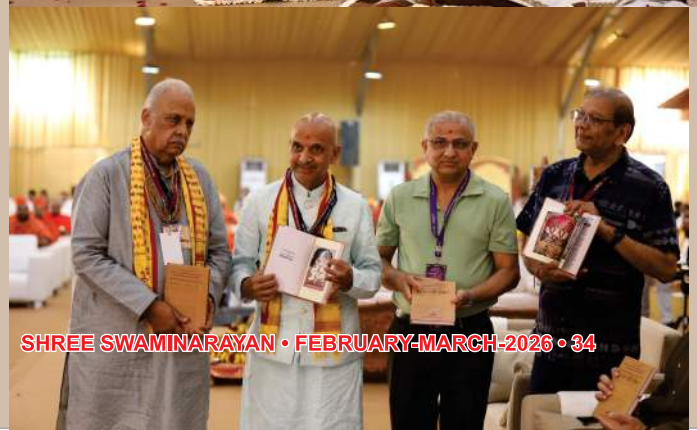


चित्र हरिफाईनुं ईनाम वितरण करता पू.बिंदुराजा









संरक्षक को मजबूत किया की वे इस बारे में सोचे । नाटक के मध्यम से अंधश्रद्दा से बाहर आकरके भगवान और भगवान द्वारा लिखे गये शिक्षापत्री के उपर श्रद्धा रखने के लिये सभी को प्रेरित किये थे । पटेल श्लोक (कडी) नाम के बालकने उस आकाश की गहराईयो में..... योग के गीत संगीत के साथ अनेक योगासनो का अद्‌भूत निदर्शन कराके सभी को मंत्रमुग्ध करके सभी के मन मे योग के प्रति अभिरुचि उत्पन्न किये । बालको ने शिक्षण, धर्म ''समैयो'' और बाल मंडल की उपयोगिता बताकर प्रत्येक बच्चो को श्री नरनारायण बालक मंडप से झुले के लिये संरक्षको को प्रेरित किया गया ।

बच्चे नृत्यु के साथ ''समैयो'' का टाईटल सांग गाने के बाद शा. स्वामी सुव्रतस्वरुपदासजी ने संक्षिप्त में समझकाकर अंत में संत और बाल मंडल संचालको के साथ फोटो सेशन किया गया था ।

दोपहर के बाद सचित्र शिक्षापत्री और स्तोत्र संहिता (संस्कृत, गुजराती, English) इन दो शास्त्रो के धर्मकुल के करकमलो द्वारा विमोचन किया गया था । शिक्षापत्री भाष्य अर्थ दीपिका टीका और अवध दिग्विजय शास्त्रो का पुन: प्रकाशन हुआ ।

अहमदाबाद मंदिर के महंतश्री पू. पी.पी. स्वामी ने अपने उद्‌बोधन में देव को धर्मादा उपर खास प्रकाश डाला गया था ।

पाँचवा दिन : पूर्णाहुति में केन्द्रीय गृहमंत्री एवम् सहकारिता मंत्रीश्री अमितभाई शाह आये थे । श्रीजी महाराज ने हम सभी को सिखाये गये आधारपर प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पू. श्रीराजा उनके सामने जाकर सम्मान पूर्वक स्टेज पर लाये थे । श्रीहरि के दोनो स्वरुपो को सम्मान दिये । तब श्री अमितभाई श्रीहरि के दोनो स्वरुपो का चरण स्पर्श किये थे । प.पू. बड़े महाराजश्री को आलिंगन करके भेटे थे । वे सभा का वंदन करके शिक्षापत्री का दर्शन किये थे । श्रीहरि के तीनो उपर स्वरुप उन्हे पुष्पमाला पहनाये, शाल पहनाये, सम्मानपत्र और श्रीरि के चरणारविंद की छाप की अनमोल भेट दी । विशेषकर उनके पौत्र के लिये श्री नरनारायणदेव को धारण करने वाली कंठी को दिये थे ।

प.पू. बड़े महाराजश्री तथा आये राजद्वार के मेहमानो को शिक्षापत्री का पूजन करके आरती उतारकर समैयो की पूर्णाहुति की थी ।

इस अवसर पर अपने कालुपुर मंदिर समैयो के अनुरुप प्रकाश से सजाया गया था । श्री नरनारायण आदि देवो को नित्य नये अच्छे-अच्छे वस्त्र तथा फल, काजू-बादाम मिठाई, मैसुब मुखवास, सूखा मेवा का अन्नकूट और अंत में छप्पन भाग अन्नकूट इस प्रकार पाँच

दिन तक अनेक प्रकार के अन्नकूट किये गये थे । पूर्णाहुति के दिन प्रातः मंदिर में यजमानश्री द्वारा पंचोपचार पूजन तथा प.पू. महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा केसर जल से अभिषेक कराया गया था ।

महोत्सव के मुख्य यजमान (१) प.भ. हंसाबेन जयंतिलाल शाह अने प.भ. सतिषभाई शाह परिवार (अमेरिका) (२) प.भ.अ.नि. जोईताभाई चौधरी परिवार (बालवावाळा) (ह्युस्टन - अमेरिका) (३) प.भ.अ.नि. कपिलाबेन विठ्ठलभाई दलसुखदास पटेल परिवार (करजीसण) (४) प.भ.अ.नि. विठ्ठलभाई सोमाभाई पटेल परिवार (पंचवटी कलोल) सहित अनेक सेवा पूजा के ६५० यजमान तथा शिक्षापत्री महापूजा के १२०० जितने यजमानो ने यजमान पद का दिव्य लाभ लिया । इस अवसर पर अधिक संख्या में धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मेक इन इंडिया के औद्योगिक साहसवीरो देश के सुरक्षा के वीर, न्यायक्षेत्र के पदाधिकारी, स्वास्थ्य और शैक्षणिक जगत के प्रसिद्ध हस्तियाँ पधारी थी । यजमानश्री, महानुभाव श्री, आमंत्रति मेहमानश्री का यथोचित सम्मान, स्वागत, फोटो सेशन आदि किया गया था । प्रवचन के माध्यम से शुभ भावना व्यक्त करने का अवसर दिया गया था । वस्त्र, अन्नकूट, पोथीयात्रा, पूजा, यज्ञ, महापूजा के यजमानो को स्मृति स्वरुप फोटो फ्रेमिंग करके दिया गया था ।

प.पू. महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. गादीवालाश्री, प.पू. मोटा गादीवालश्री, पू.श्रीराजा, पू. बिन्दुराजा, प.पू. बड़े महाराजश्री बहनश्री "समैया" के दरम्यान पूरे समय उपस्थित रहकर सभी को दिव्य सुख दिये थे । प.पू. महाराजश्री की नानीमाँ, मामाश्री इत्यादि धर्मकुल के कई मेहमान अवसर पर आये थे । समैयो का पूरा विजन और मार्गदर्शन प.पू. लालजी महाराजश्रीने किया था ।

धामोधाम से सैकडो ब्रह्मनिष्ठ संत और सांख्ययोगी माताये पधारी थी । विद्वान अग्रण्य संत अपने मंगल उद्‌बोधन द्वारा शिक्षापत्री को केन्द्र में रखकर जीवन जीने के सही रास्ते को बताये । धर्मकुल के हजूरी पार्षदो की सेवा अद्वितीय थी । अधिक संख्या में संतो की हाजिरी समैयो के स्टेज की शोभा बढाई थी ।



ग्राउन्ड के द्वार से सभा मंडप तक आने जाने के लिये वृद्धो हेतु १५ गोल्फ कार की व्यवस्था की गयी ती । सांस्कृतिक, प्रदर्शन के गोल्फ सभी प्रकार की सेवा फ्री मे थी । समैयो के उपलक्ष्य में अग्रिम आवश्यक गरीब लोगो को कम्बल, रजाई, शाल इत्यादी देकर प.पू. लालजी महाराजश्रीने अपने करकमलो से वितरण किया था ।

धर्मकुल का एक ही लक्ष्य है । एक व्यक्ति के लिये कितना भी खर्च किया जाये । वह व्यक्ति किसी भी प्रकार से भगवान के सन्मुख आये । इससे इसका लोक सुखी होगा । अंत में उसके जीव का कल्याण होगा ।





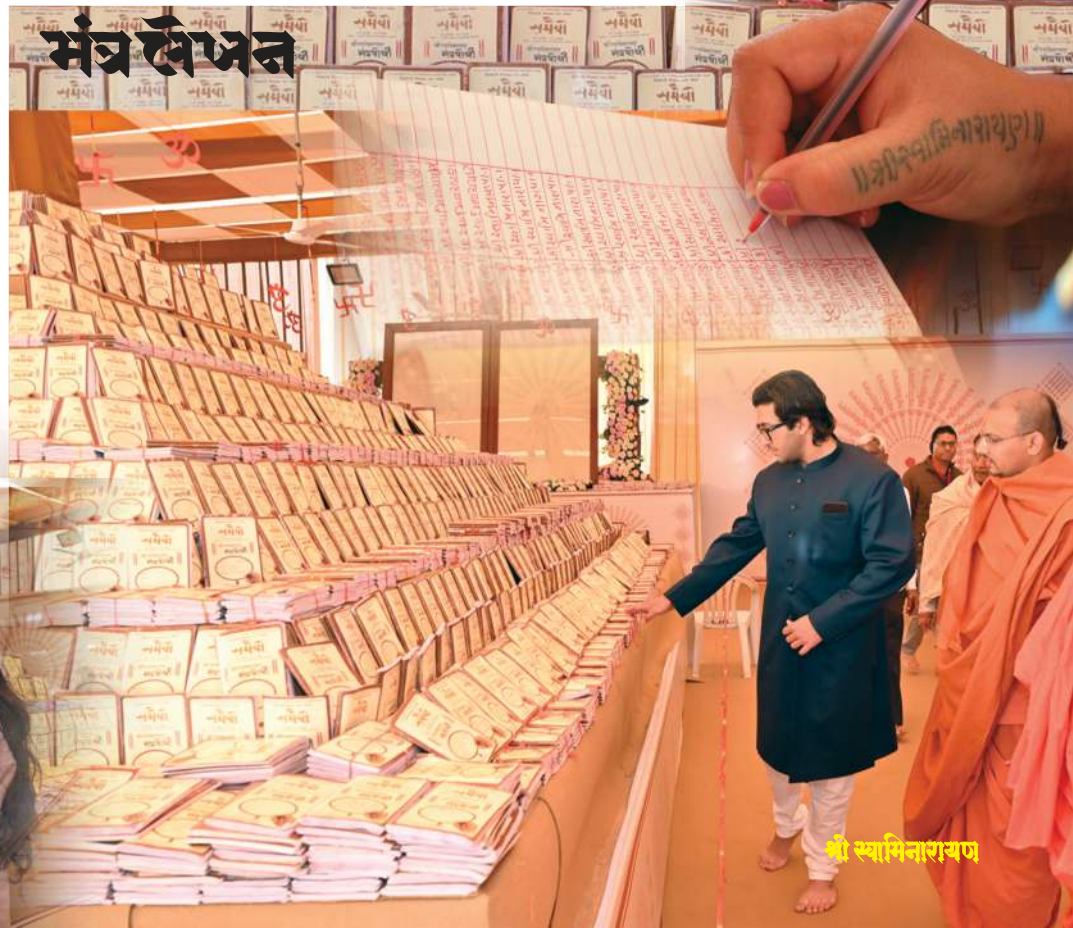








मंत्र लेखन







23-1-2026



24-1-2026



25-1-2026



26-1-2026



27-1-2026











॥ यज्ञ ॥









अभिषेक















धर्मकुळ परिवार



समैयो

श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो के मुख से आशीर्वचन

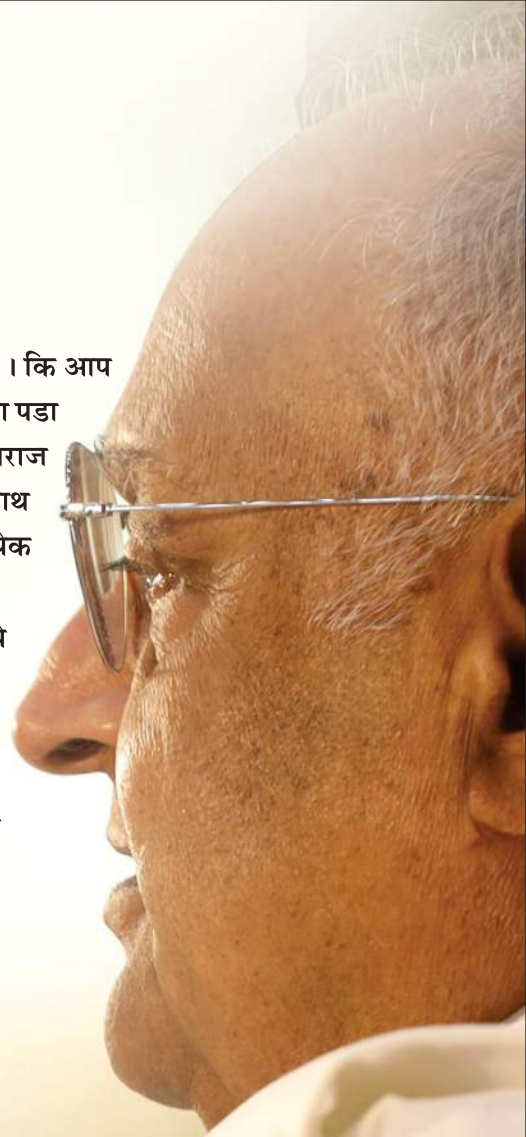
प.पू. बड़े महाराजश्री "समैयो" विजय स्तम्भ स्थापना के अवसर पर ता. १०-१२-२०२५ : आदरणीय संतो और प्रिय सत्संगी भाईयो, हम हमेशा से देखते आये है कि नरनारायणदेव के छत्रछाया के नीचे जो भी उत्सव हुए है। वे एक से बढकर एक उत्सव हुए है।

पिछले कई वर्षो के बाद द्विशताब्दी उत्सव आया है। यदि देखे तो बड़े उत्सवो की शुरुआत वही से हुई है। जब की महाराज के समय कई उत्सव हुए है। लेकिन इस शहर मे सम्प्रदाय में जब द्विशताब्दी उत्सव शुरु हुआ। उस समय विजय स्तम्भ की स्थापना करना था। तब हमने महाराज से आग्रह किया कि उत्सव अच्छा होगा तो आप का वाह-वाह होगी। मेरा इसमे कुछ नही है। यह उत्सव विश्व में यादगार के रुप में हो गया।

इन उत्सवो का चार्ज महाराजने नरनारायणदेव को सौंपा है। आप को ज्ञात ही है ? वचनामृत में कहे है कि, उत्सव कभी तुलसी के पत्ते से तो, कभी लाखो रुपया खर्च करके करते है। नरनारायणदेव की ईच्छा होने पर जो अपनी धर्मध्वजा है। आप को ज्ञात नही है। नरनारायणदेव सफेद ध्वजावाले कहे जाते है। ध्वजा में हनुमानजी होते है। दूसरा कोई नही होता है। भक्त कवि दलपतरामने उल्लेख किया है। बापूजी के साथ भी बात होती है। कोई प्रश्न आता है तो बापूजी कहते है। सफेद ध्वजा वाले हमारी चिंता करते है। हम सभी सफेद ध्वजा वाले है। तो आये शिक्षापत्री का उत्सव मनाने जा रहे है। तब महाराज अपने साथ है।

एक अवसर मुझे याद आता है। महाभारत का युद्ध प्रारम्भ होने वाला था। दुर्योधन और अर्जुन दोने के आराध्य कृष्ण भगवान थे। इस लिये दोनो श्रीकृष्ण के पास आये। दुर्योधनने श्रीकृष्ण से उनकी सेना की माँग किये। अर्जुनने साक्षात् परमेश्वर श्रीकृष्ण की माँग किये थे। कि आप हमारे साथ रहे। अर्जुन को तो माँगना पडा था। लेकिन रामप्रतापभाई को महाराज सामने आकर कहे कि मैं तुम्हारे साथ रहुँगा। जिसका हम लोग अपने प्रत्येक उत्सव-प्रसंग में अनुभुति करते है।

लालजी महाराजश्री के लिये यह एक अच्छा अवसर Opportunity है। नरनारायणदेव से प्रार्थना है कि नरनारायणदेव गादी की परम्परा और शोभा है। यह संतो-हरिभक्तो के साथ रखकर विजय प्राप्त करे। लोक प्रिय बने। सत्संग तथा संतो को खुश रखे। गादी की गरिमा इनके द्वारा अच्छी बनी रहे। ऐसी श्रीजी महाराज के चरणो में प्रार्थना है।



प.पू. लालजी महाराजश्री : अपने सम्प्रदाय में धार्मिक क्रिया-कलाप प्रत्येक अवसर पर की जाती है। प्रसंग न होने पर भी अपने सम्प्रदाय में कभी धार्मिक प्रवृत्ति कम नही होती है। शिक्षापत्री महाराज ने लिखकर दिया है। जो धार्मिक नियमो के साथ ही मानवधर्म को भी बताता है। महाराज के पूरे जीवन का अवलोकन करे तो कैसे एक अच्छा हरिभक्त के साथ अच्छा मनुष्य बनकर अपनी परम्परा की रक्षा की जा सकती है। महाराजने जो अवसर दिया है। समाज में किस तरह, ऐसे व्यक्ति है शायद उन पर भगवान की कृपा कम हो ऐसे लोगो को भोजन कराये। और अन्य सहायता दे। अभी एक कार्य जो महंत स्वामीने बताया है। ठंडी का समय है। ठंडक को रात ही है। मजबूत वर्ग है। जो घर विहीन है। सडक के किनारे रहते है। उन्हे अन्न तथा शाल, कम्बल तकिया दे। अहमदाबाद क्षेत्र, अहमदाबाद देश के गाँवो में जहाँ पर मंदिर है। सत्संग वाले स्थान पर यह प्रवृत्ति होगी। यह संकल्प गादीवालाश्री का है। मैने स्वयं देखा है। कि वे प्रति वर्ष जाकर कम्बल, खाने की वस्तु सभी देती है। इस प्रवृत्ति को करने के लिये बताया जायेगा। एक दिनांक निश्चित किया जायेगा। उस दिनांक से प्रारम्भ किया जायेगा। "समैयो" पूर्ण होने तक यह कार्यक्रम रखा जायेगा। इसमें संख्या की सीमा नही रहेगी। दो से पाँच लाख जो प्रभु ने शक्ति दी है। उतने लोगो की सहायता करना है।



उत्सव का लक्ष्य भगवान को खुश करना। और महाराज ने हमको सिद्धान्त दिये है। वह प्रत्येक व्यक्ति तक एवम् हरिभक्तो तक जाना चाहिए। २१२ श्लोक की शिक्षापत्री महाराजने अपने हाथ से लिखकर दिये है। यह शिक्षापत्री प्राणीमात्र का कल्याण करने वाली है। महाराजने शिक्षापत्री में नियम दिये है। इसका हम सभी को पालन करना चाहिए। यह उत्सव का मुख्य उद्देश्य है।

जितना समय है। इसमें परिश्रम करके अधिक से अधिक लोगो को जोडे। लोग कल्याण के मार्ग पर आगे बढे। अंत में श्रीहरि की स्मृति सहित आशीर्वाद दिये है।

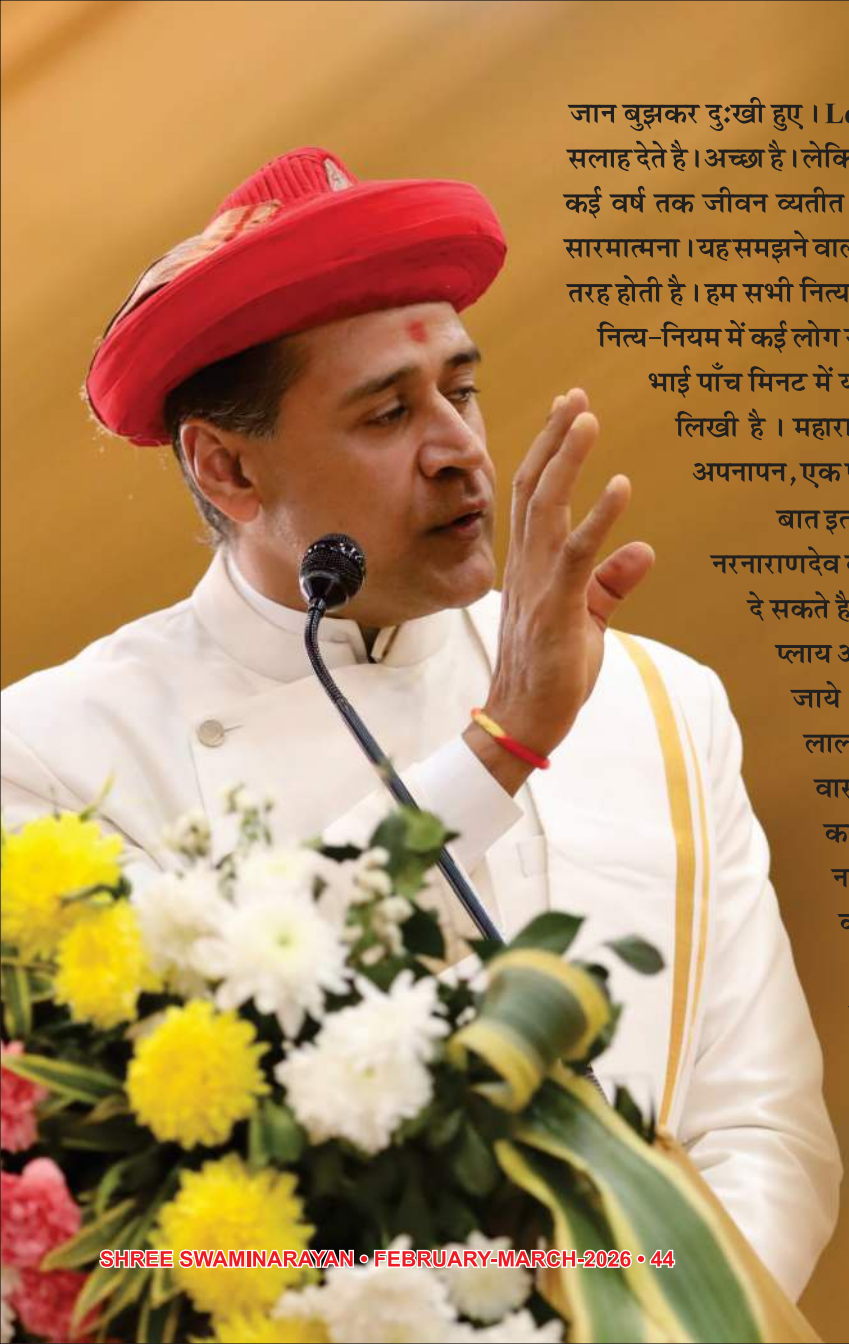
प.पू. महाराजश्री : आज मौसम बदल गया है। रोज ऐसा शीतल वातावरण नही था। भगवान हमेशा हम सभी के उपरकृपा करते है। भगवान के चरणो में, भगवान के सानिध्य में शीतलता है। यह शीतलता हृदय की है। शरीर की नही है।

शिक्षापत्री में महाराजने लिखा है उसमें से तीन शब्द मैं कहता हूँ। इष्ट फलदायिनी बड़ा फल देने वाली। यह शिक्षापत्री में मात्रा है। शेष कई श्लोक में आता है। जब नव वर्ष का था। तो बड़े बापजी के साथ मोरबी गया था। बापजी



बोले, अब शिक्षापत्री संस्कृत में बोलो। मैं तो घबरा गया था। केवल नव वर्ष का था। अर्थात् प्रारम्भ शिक्षापत्री से होती है। मैं कंठस्थ नही सीखा हूँ। तब से प्रारम्भ किया। तब से बोलना प्रारम्भ किया हूँ। कोई सुनता नही है। आप संस्कृत में ११ श्लोक कंठस्थ करके बोले तो मैं मान जाऊ की मेरा हो गया। पारायण सुना है आप के पास से संस्कृत में लेकिन वास्तव में अपने सुखी है तो इसके पीछ का कारण शिक्षापत्री ही है। अन्न, वस्त्र और सम्मान इसकी अपनी जिम्मेदारी शिक्षापत्री ने ले रखा है। बड़ा फल देने वाली इस संसार में और शायद शरीर छूट जाये तो सतयुग, तेत्रायुग, द्वापर या कलियुग कोई भी युग हो, इतने बडी जिम्मेदारी स्वयं के पिताजी नही लेते है। यह आप तथा हम दोनो मानते है। अन्तिम श्वास तक आपकी सुरक्षा तथा कोई दु:ख नही आये। यह महाराज ने हम लोगो के लिये माँगा है। सभी का केन्द्र बिन्दु है तो यह शिक्षापत्री है।

द्विशताब्दी उत्सव के पश्चात ४५ वर्ष के बाद समैयो आया है। भारत विकासशील देश है। दूसरा कोई कितना भी प्रतिबंध लगाये। लेकिन भारत 85 GDP (Gross Domestic Product - सकल धरेलु उत्पाद) के उपर चलता है। अमेरिका वाले क्या कर लेगे ? डोलर भेजे वह भी केवल सतकार्य के लिये। हमे नही चाहिए। मंदिर बने, सत्संग हो और अपने बच्चे-बच्चियो के लिये सुविधा मिले। शेष दूसरा नही भेजे। नही तो सट्टाबाजी और मदिरा पर उडा देगे। प्रहलादभाई आप हँसा करे। आपने करजीसण में भेजा था। महाराज को ४५ वर्ष का अनुभव है। आज मानले कि कृतघ्न संगस्त्यत्कर्यो लुच्चा ग्राह्या न कस्यचित श्लोक लिखे। वनविचरण में सेवकराम मिले। वह कृतघ्नी हो गये। वचनामृत में पहला उदाहरण मिलता है। शेष अधिक उदाहरण नही है। बात नही, चरित्र नही, अति संक्षिप्त चरित्र है। सेवकराम का चरित्र सर्व प्रथम लिखा है। वचनामृत में लिखे, कृतघ्नी का साथ कभी नही करना चाहिए। अब आप सोचे ४५ वर्ष के बाद भी याद रहा। कोई कुछ लेकर चला जाता है। तो हम उसे भूल जाते है। महाराज कुछ छोडते नही है। महाराज अनुभव करके उपदेश्य लाये है। शेष उपदेश देने के लिये तो मैं हूँ और कई लोग बेठे है। यह एक सत्यता है।त्वयं अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति है। लेकिन हम लोगो के लिये जा दिये है। वह अनुभव मे लाकर दिये है। एक-एक श्लोक, एक-एक आज्ञा का निष्कर्ष निकाले तो उसके पीछे बड़ी कहानी है। महाराज जानबूझकर अनुभव में लाये।



जान बुझकर दुःखी हुए । Leading by Example उदाहरण द्वारा मार्गदर्शन दिये है । शेष यह करे वह करे कोई लोग सलाह देते है । अच्छा है । लेकिन स्वामिनारायण भगवान ने वन विचरण किया । छपैया और अयोध्या में धुमे । सम्प्रदाय में कई वर्ष तक जीवन व्यतीत किये । ४५ वर्ष के पश्चात यह शिक्षापत्री देकर बोले कि सच्चास्त्राणां समुदधृत्य सर्वेषा सारमात्मना । यह समझने वाली बात है । प्रतिदिन पढ़ने पर भी भूल जाती है । क्योकि उपर चला जाती है । नित्य-नियम की तरह होती है । हम सभी नित्य नियम करते है । अब तो काम होता जा रहा है । लेकिन जो नीह करते है वह अवश्य करे । नित्य-नियम में कई लोग रहते है । कौन सबसे पहले करता है । यह आपस में लडाई है । मुझे तो पाँच मिनट ही लगता है । भाई पाँच मिनट में यह पूरा नही करना है । ऐसा करना है । तो मत करे । महाराज की एक-एक बात नंद संतो ने लिखी है । महाराज का स्वभाव, गुण, महाराज की क्रिया, महाराज की संतो एवम् हरिभक्तो के प्रति अपनापन, एक पंक्ति में पूरा इतिहास पूरा निबंध (थीसिस) लिखा जाये इतना दिया गया है ।

बात इतनी सी है कि शिक्षापत्री संसार जातना है । लोक भोग्य है । विशेष करके भगवान की महिमा, नरनाराणदेव की महिमा जितना लोग जानते है । इतना प्रयत्न हमें करना है । हमें जो मिला है । दूसरे को हम दे सकते है । इससे अपनी जीवन सफल हो जायेगा । इसलिये पाँच गद्दे, अच्छे रेशम के २ प्लाय, थ्री प्लाय और फाईव प्लाय पता नही क्या क्या आता है । विदेशो में तो ऐसे गद्दे आये है कि रात को सो जाये । तो सुब उसमें से निकलने में कष्ट होता है । लोग सडक पर सोते है । उन्हे एक देना चाहिए । लालजी महराजने कहा गादीवालाकी । मैं तो गवाह हूँ । प्रशंसा के लिये नही कह रहा हूँ । लेकिन वास्तव में कह रहा हूँ । इसी प्रकार देते है । बहनो का काम है । कोई सोया रहता है तो उसे ओढा कर आ जाती है । शेष यश लेना हो तो उसे उठाकर दे । यह फोटो खिंचवाने के लिये होता है । यह नाटक हमे नही करना है । आप का मन कहे तो दो आदमी जाकर, जो पेपर ओढ़ सोया हो । उसे कम्बल ओढा दे । आपका हृदय खुश हो जायेगा । यह घटना आप कभी नही भूलेगे ।

मैं तो अनुभव करके कहता हूँ । हमारे आलमारी में इतने कपडे है । अब तो उसमें स्थान ही नही बचा है । इतने जूते है कि पहनने का अवसर नही मिलता है । पूरा गाँव पहने तो भी बढ जायेगा । यह सत्य है । भगवानने दिया है । दया है । अच्छा है । आप भोग करे । हम यह नही कर रहे है कि सब कुछ देकर खराव पहन कर आये । जिसके पास नही है । उसे कुछ अवश्य दे । जिसके पास कपडा नही है । उसे कपडा दे । स्वयं के अनुभव से ज्ञात होता है । जब हम, सभी बद्रीनाथ जाते है तो पाँच से आठ स्वेटर लेकर जाते है । जहाँ जरुरत हो

वहाँ पर दे। यह स्वामिनारायण भगवान का दिया सिद्धान्त है।

ठंडक का दिन था। महाराज चूल्हे के पास ताप रहे थे। सभी संत-भक्त साथ में थे। महाराज पतला वस्त्र पहने थे। सुरा खाचर को लगा कि महाराज को ढंड लग रही होगी। तो वे कही से साल ले आये। महाराज को ओढा दिये। उसी समय कोई हरिभक्त पुराना फटा वस्त्र पहनकर आया। महाराजने उस भक्त को अपनी साल दे दिये। सुरा खाचर ने कहा कि आप क्या कर दिये ? मैं किसी तरह से खोजकर आप के लिये साल लाया था। आप तो दे दिये। कोई ने दुखियो रे, देखी न खमाय, दया आणी रे, अति आकला थाय..... अन्न, धन, वस्त्र देकर दुख काटते है। करुणा दृष्टि वाले है। यह स्वामिनारायण भगवान का सहज गुण है। हम जिसके साथ रहते है। उसका प्रभाव हमारे उपर पडता है। टीका लगाते है तो कुछ गुण आने वाला ही है। यह सत्संगि कहलाता है। यह महत्वपूर्ण बात है।

हम सभी को भगवान का सुख मिला है। तो उस भगवान को सुख दे। साथ ही साथ कोई वस्त्र, कोई साधन जिसकी दूसरो की आवश्यकता हो। ये भी देते है। अपने पास अधिक है। इस लिये उसे निकाल कर दे देते है। ऐसा नही देगे तो अपने अन्दर मानवता के लक्षण दिखेगा। End of the day अपना उहसव मात्र अपने लिये नही, सत्संगी के लिये भी नही। आप सब तो घर के है। मेहमान नही है। यजमान है। आज आये है। वे सभी घर के मालिक है। हमे कार्य पर लग जाना है। समाज के लिये कुछ करेगे तो अपना गुण तो आयेगा। साथ में भगवान का गुण एक को आयेगा। यह अगुंली दिखाने का परिणाम है। सत्कार्य करने पर कोई ना कोई स्वामिनारायण भगवान का भक्त था। भगवान भी आशीर्वाद देगे। किसी का दिल से आशीर्वाद प्राप्त होगा। यह वह काम करेगा जो एक माला से नही हो सकता है। मैं यह लिखकर देता हूँ। बचन में रहने वाली बात है। आप तो जानते हो। आप के लिये नही कह रहा हूँ। आप को कहने परे शीघ्र से हो जाता है। दूसरे तक प्रसार हो यह करना है। पहले जो कहे है कि गाँव में केवल डालर ही नही भेजे। लेकिन गाँव में जिसे कुछ जरुरत हो उसे अवश्य दे। इससे भगवान खुश होगे। शिक्षापत्री अगाध है। अपने बस की बात नही है। कि इसमें हम चोच डूबा सके।

विजय ध्वज कितना सुंदर दिख रहा है। कोई दर्शन भी करे तो उसका अच्छा हो जाये। यह हनुमानजी अयोध्या दादा स्थापित है। प्रसादी के हनुमान दादाजी है। और अपना सुंदर उत्सव है। भगवान मिले है। सब कुछ उनका ही है। श्वास भी उनकी है है। अपना सबकुछ उसका है। लेकिन धन्यवाद है हम सभी इसके भागीदार बने है। इसमें तन, मन, धन से थोडा भी भाग लेगे तो। यह जीवन की स्मृति बनेगी।

अभी कोई एल.ए. कोई गाँव गया था। विदेश में कही। स्वर्ण जयंती में जिसने कार्य किया। वह सभी विदेश चले गये। भगवानने व्यवस्था कर दी। अभी सभी सुखी और सम्पन्न है। वडुवाले थे। १८००० जितने तो स्वयं सेवक के आवेदन आये थे। मोखासण के थे। झालावाड के थे। कच्छ के थे। हमने कहा कि हमे हरिभक्तो को सम्भालना है कि आप को ? शेष ८००० निकालना पडा था। १०००० रखे थे। हमारे पास अधिक सुविधा है। हम सभी की संयुक्त जिम्मेदारी भगवान को खुश करने की है। अंत में सभी को प्रेमभरा आशीर्वाद मिले।

ता. २३-०१-२०२६ मूलीधाम प.पू. महाराजश्री : शिक्षापत्री के पहले स्तुति की गयी। वामे यस्य स्थिता राधा श्रीश्च यस्यास्ति वक्षसि। वृन्दावन विहारं तं श्रीकृष्णं हृदि चिन्तये ॥ इसलिये आज अहमदाबाद में "समैयो" होगी। राधाकृष्णदेव के सानिध्य से चालू ऐसा संकल्प लालजी महाराजने किया।

यह झालावाड देखने में शुष्क है। अदंर से हरा-भरा है। देव के हमेशा लगाव, वफादारी, निष्ठा रही है। यह अद्‌भूत बात है। आज के पवित्र दिन पर सभी हरिभक्त एकत्र हुऐ है। जितना भी देव के प्रति हो। यह महत्वपूर्ण है।

आज जो शिक्षापत्री का प्रतीक यहाँ पर रखा गया है। यह अपने लिये



लिखी गयी है। कल हमने भुज में कहा था। पुनरावर्तन नही करना है। यह ग्रंथ हम सभी के लिये हित हेतु, कल्याण के लिये लिखा गया है। बच्चा छोटा रहने पर पिता अंगुली पकडे या हाथ पकडे। बच्चा बडा हो जाने पर पिता या बच्चा हाथ छोडे देता है। गिरेगा तो सिखेगा। यही संसार का क्रम है। एक सुनी हुई दंत कथा है। पिता छत के उपर नलिया अच्छी करने के लिये सीढी दी। स्थानीय भाषा में बोलना है। कच्छ मे कच्छी भाषा में बोले थे। कच्छी लोग निहरणी नही समझते है ।निहरणी अर्थात् सीढी। बच्चा १५ वर्ष का था। तो पिता ने कहा कि तुम उपर जाओ। नलिया सीधी करदो। बच्चा चढ गया। अर्थात् पिता सीढी को नीचे रख दिया। बच्चने कहा आपने चढाया भी और गिता भी दिया ? पिताने कहा यही तो सिखाना था। कि सगे पिता के उपर विश्वास नही करो।

यहाँ पर झालावाड से एक ८५ वर्ष के भाभा वृद्ध आये थे। आगे दूब है। लान है। वहाँ पर बात करने के लिये शांति से से बेठे थे। वह नीचे बैठे थे। मैं भी नीचे बैठ गया। मैने पूछा क्या लेगे ? चाय-पानी पीना है ? उसने कहा ''दूध पीना है''। ठीक है मुझे व्यक्तिगत रुप से लाभ, लालच कुछ सिखने को मिलता है तोले लेता हूँ। मैने कहा बात कहिए। उनके कहा, कहने लायक नही है। मैने कहा क्यो ? यह असत्य बात नही कर रहा हूँ। बनावटी बात भी नही है। सामने बैठकर बात की है। १५ वर्ष पहले की बात है। वहाँ पर बैठे-बैठे वृद्धने कहा। यह दुनिया किसके उपर चलती है। मै थोडा विचार करने लगा। किसके उपर चलती है। यह कहे उसी पर चलती होगी। एक उपर चलती है। ''इस में मेरा क्या ? नही तो मुझे क्या ? यह एक ही वस्तु है। इसी पर दुनिया चलती है। मैने कहा, आज से आप मेरे गुरु है। यह सत्य है। इस संसार में आप विचार करे मेरा क्या ?नही तो मुझे क्या ? दुनिया इसी पर चलती है। इस सम्प्रदाय में अपने आश्रितो के बच्चे एवं बच्चियो के कल्याण हेतु महाराज अपने हाथ मे लिया। इतना तक महाराज ने कहा है। इस शरीर द्वारा सुख तथा शरीर न रहने पर भी सुखी रखेगे। यह हमारी जिम्मेदारी है। यदि आप सत्संग में रहेगे ? यह बात यहाँ पर आकर रुक जाती है। यह शिक्षापत्री देकर महाराजने हम सभी का हाथ पकडा है। कभी हम भगवान से दूर नही है। भगवान कभी अपने से दूर नही है। सर्वांगी रुप से सुखी बनाये है। भगवान के अलावा कही भटके नही। वह ध्यान देना है।

बालासिनोर में गया था। मैने सभा में बात की थी। सामान्य बात की थी। आज में गद्दी पर बैठा हूँ। इसके उपर आचार्य बदल गये। आज से ५० वर्ष पहले कोई और था। १०० वर्ष पहले कोई और था। आप सभी हरिभक्त सामने बैठे है। ये भी बदले है। दो-तीन पीढी देखी है। संत भी बदले। बैठे लोग भी बदल जायेगे। भगवान बदले ? बस यहीं पकडना है। भगवान को पकडने से पीढी दर पीढी सुरक्षित हो जायेगी। यह समझाना अति आवश्यक है। भगवान का बन कर रहना अति आवश्यक है।

अंत में प.पू. महाराजश्री देशो-देश से आये हरिभक्तो को नाम से बुलाकर सम्मान किये। अंत में अहमदाबाद आने के लिये सभी को आमंत्रित किये।

प.पू. लालजी महाराजश्री : आप सभी हरिभक्तो का समैयो में स्वागत है । आज समैया की शुरुआत में गुजरात राज्य के माननीय मुख्यमंत्रीश्री भूपेन्द्रभाई पटेल अपने सामने उपस्थित है । अपने सम्प्रदाय का सम्बन्ध इनसे घर जैसा है । जहाँ जहाँ पर अहमदाबाद देश के कालुपुर मंदिर को या संस्था छोटे-बड़े मंदिर की छोटी-बड़ी आवश्यकता उत्पन्न हुई है । आप स्थायी रुप से सहयोग दिये है । इसके बदले में पूरे सत्संग समाज हरिभक्तो एवम् मेरे परिवार औ पूरे संस्था की तरफ से आप का अभिनंदन है । विशेष कर प्रथम दिवस पर आने पर प्रसंग की शोभा बढा दी है । इसके लिये आप को धन्यवाद ।

इतनी बड़ी संख्या में संत और हरिभक्त उपस्थित है । इस समैयो को मनाने का कारण, स्वामिनारायण भगवानने हमे जो मूल सम्प्रदाय की प्रणालिका और जो सिद्धान्त दिये है । यह बनी रहे । इस लिये समैया मनाया जा रहा है ।

२००-२०० वर्ष शिक्षापत्री लेखन को हो गया । मात्र २१२ श्लोक की शिक्षापत्री लिखकर दिये है । यह शिक्षापत्री सभी वेदो का सारांश है । हमे गृहस्थ रुप में संत रुप में कैसे रहना है । कहाँ बैठना है ? कहाँ उठना है । कहाँ पर जाना है । क्या करे । क्या नही करे । ये सभी नियम पूरा लिख कर दिये है । इसका ऋण हम चुका नही सकते है । आने वाली पीढी अपने जीवन में यह उतारे । साथ ही साथ शिक्षापत्री में जो आज्ञा है । उसका पालन करे ।

समैयो के माध्यम से अधिक से अधिक लोगो तक शिक्षापत्री पहुँचे । हरिभक्तो का उत्साह में देख रहा हूँ । जैसा उत्साह "पर्व" में था वैसा उत्साह "समैयो" में भी है ।

अंत में भगवान के चरणो की ऐसी वंदना है कि "समैयो" अच्छे और निर्विरोध रुप से पूर्ण हो जाये । साथ ही साथ जो लक्ष्य है, उद्देश्य है । मूल प्रणालिका शिक्षापत्री में जो सिद्धान्त और नियम महाराजने लिखकर दिया है । प्रत्येक तक जाये हम सभी को शक्ति मिले ऐसा नरनारायणदेव के चरणोमें प्रार्थना है ।





प.पू. महाराजश्री : अधिक आनंद है। आज पवित्र वसंत पंचमी के दिन समैयो मे आये है। विशेषकर गुजरात राज्य के मुख्यमंत्री है। हे हमारे पडोसी है। इतना बड़ा पद वाले व्यक्ति सरल और सहज है। इनकी मुस्कराहट के पीछे बडा योगदान है। कई वर्षो से मै साहब को जानता हूँ। आपने कठिन अवस्था में अथक परिश्रम किये है। एक-एक व्यक्ति तक सेवा देकर इस पद को प्राप्त किये है। गर्व है हमें कि आप हमारे पडोसी है। और मेरे है। हम जब भी मिलने जाते है तो उनके कांतिमय शरीर तथा उनकी पूरी टीम होती है।

शिक्षापत्री, मेरी वाणी मेरा स्वरुप है। कोई भी सम्प्रदाय हो। इस सम्प्रदाय का उद्घोष 'विकास' और विस्तार है। यह परम्परा बनी रहे। इसके पीछे का कारण स्वामिनारायण भगवान है। इन शास्त्रो के कारण हो रहा है।

हम सभी भाग्यशाली है। अपने पास यह शास्त्र है। साहब आये तथा साहब से हमने कहा कि इस ओरीजिनल हरिमंदिर में जो दरवाजा था। उसकी परम्परा हम बनाये है। यह मूल शिक्षापत्री है। आप सभी के दर्शन के लिये रखी गयी है।

आप सभी एकत्र हुए है। न्युजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया, संसार के एक-एक कोने हरिभक्त आये है। साहब। किसी को परेशान नही किया। दुराग्रह भी नही किये है। यह सब हमारे संतो की फौज है। पूंरी अद्श्य टीम है। अधिक मेहनत करके २०-२५ दिन में यहाँ पर जो था। उसका स्वरुप बदल दिये। (लालजी महाराजश्री) मेरे पुत्र है। मैं प्रशंसा नही करता यह दिन-रात याद रख कर ध्यान दिये है। अपनी इस पीढी में जो युवक-युवतियाँ अपने सम्प्रदाय में देश-विदेश में जुडे है। ये लोग अपने स्वामिनारायण भगवान द्वारा दिये गये सिद्धान्त और परम्परा में रहकर कार्य कर रहे है। यह अद्वितीय गुण है। सिद्धान्त परम्परा और मानवता बनी रहे। एक दूसरे के काम मे आ सके। एक दूसरे का सहयोग कर सके। एक परिवार के रुप में रह सके। यह महत्वपूर्ण है। इसके लिये यह कार्य कर रहे है।

आप सभी को देखकर - दर्शन करके अति आनंद आया। यह सब करते है। अंत में किनारा क्या है ? तो वह भगवत प्राप्ति है। भगवान पारायण हमे बनना है।

आप सभी ने मंदिर में दर्शन किये। सभी देव रखे गये है। कोई भगवान छोटे-बड़े नही है। उसी प्रकार हरिभक्त भी छोटा-बड़ा नही है। जिसे आगे जगह मिली। जिसे पीछे जगह मिली लोग वैसे बैठ गये।

साहब से लेकर छोटे बच्चे तक अपनी भावना होती है। प्रेम है। लगाव है। इस लिये प्रेमपूर्ण लगाव से यहाँ आये है। और आयेगे भी। आप सभी का अनेकानेक धन्यवाद भगवान आशीर्वाद दे। परिवार सब का सुखी रहे। मंगल करे। ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना करता हूँ।

ता. २४-०१-२०२६ प.पू. महाराजश्री : २०२७ में धोलका मंदिर में लालजी महाराजश्री अध्यक्षता में आप सभी के सहयोग से बड़ा उत्सव करना है।

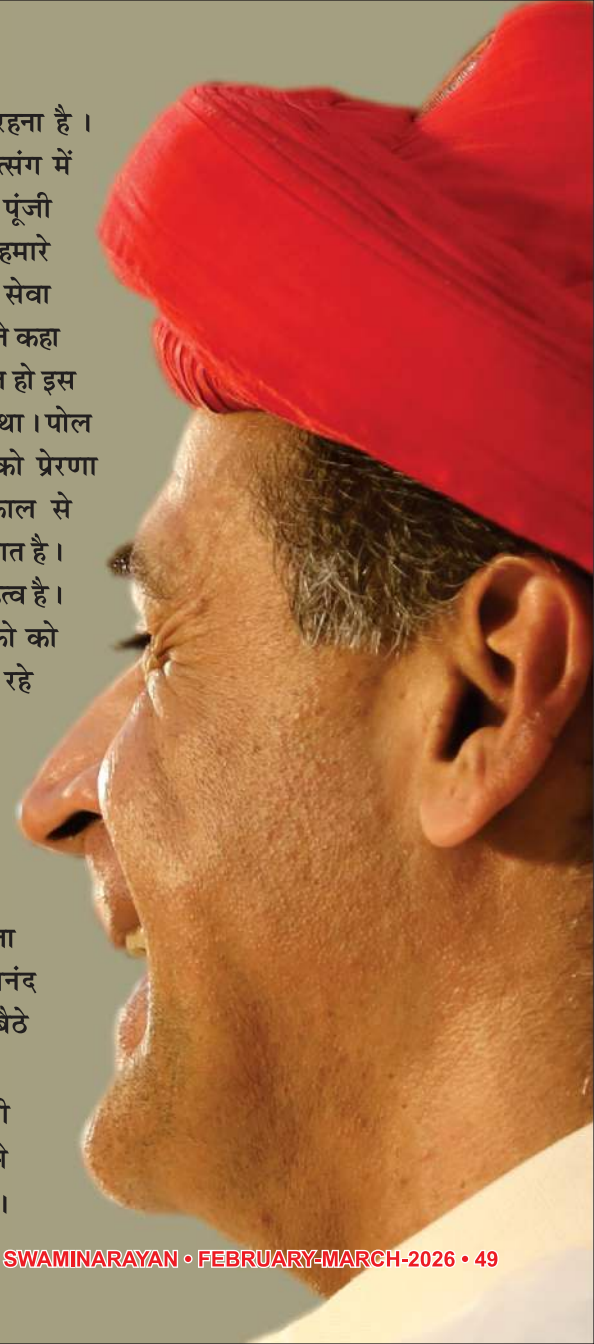
बीच में मैं गाँव गया था। गाडी से उतरते ही एक विचार आया। मैने लालजी से बात किया। हम सभी उत्सव का नाम नही रखते है। लेकिन विचार आया है। वैसे तो मैं चमत्कार में विश्वास नही करता हूँ। लेकिन भगवान ने प्रेरणा की है कि धोलका उत्सव का नाम "त्योहार" रखना है। पर्व नाम गादीवालाने रखा था। आज भी कई बच्चो का नाम पर्व है। याद रहे कि यह है। पर्व हुआ, समैयो हुआ, अवसर होगा। इसके बाद त्योहार होगा। भगवान से मिलने का आनंद मनाना है।

त्योहार किसका ? समैयो किसका ? समैयो का अर्थ अपने शास्त्र में लिखा है। गुजराती शब्द कोश के अंदर भी अभी राम स्वामीने बात की है। इस प्रकार भगवान पधारते थे। तब भक्त गण गाँव के सरहद पर लेने जाते थे। उस समय DJ-BJ नहीं था। अपने परम्परा और प्रणालिका के अनुसार छोटे-बड़े भावानुसार जाते थे। सामैयुं करते थे। और भगवान को लाते थे। इसको समैयो कहते थे। अपने जीवन में भगवान शिक्षापत्री के रुप में आये है। उसी का यह उत्सव है।

धोलका जहाँ पर छोटी जगह थी। सभी की अनुकूलता अनुसार इसके आस-पास के घर को लेकर डायरेक्ट रोड पर एक्सेस मिले ऐसा हमें करना है। कारण यह है कि महाराजने हम सभी को नव मंदिर दिये है। इस में से धोलका के मंदिर में भगवान द्वारा स्थापित मूर्तियाँ प्रतापी देव है। धोलका प्रांत के नल विस्तार और भाल प्रदेश इन दोनो को सम्भालने के लिये। देव की प्रतिष्ठा किये थे। और काष्ट की मूर्ति अहमदाबाद रंगमहल में है। हवेली में है। और काष्ठ की मूर्ति धोलका मे हैं।

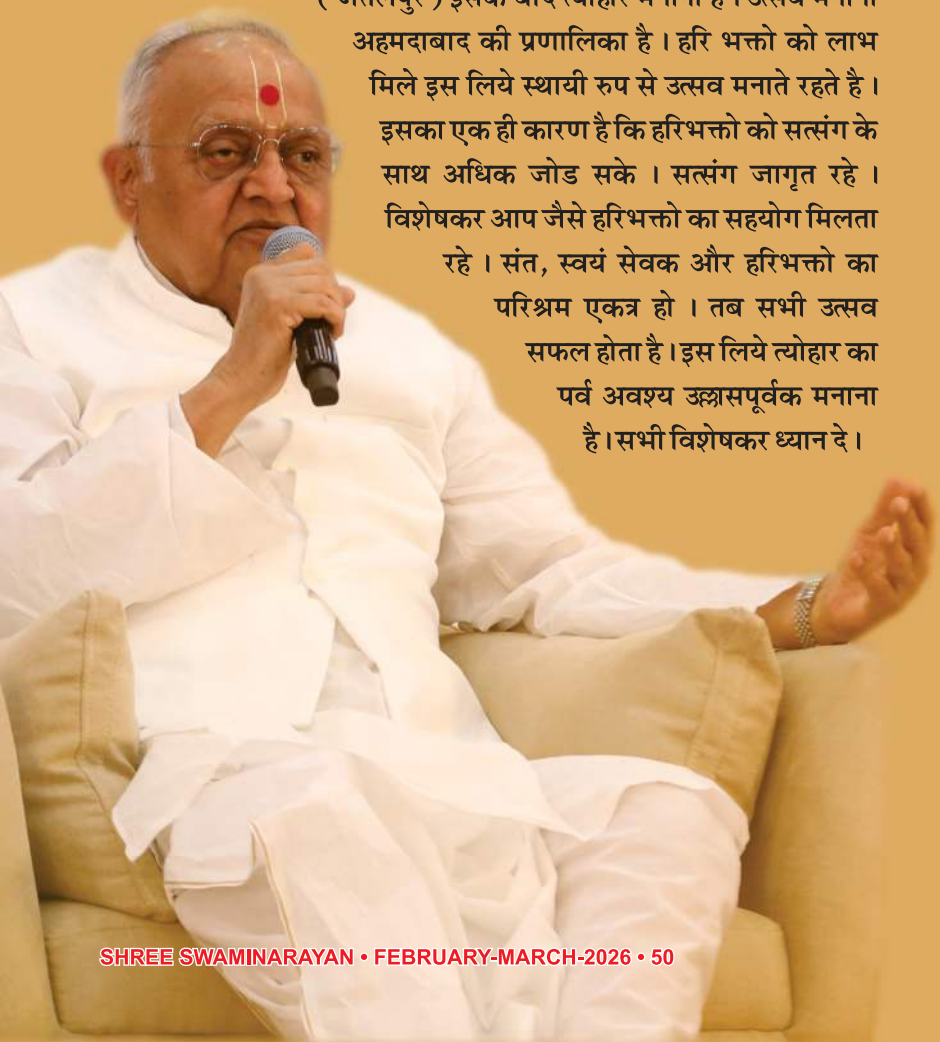
कहने में आनंद होता है। कहने ही बैठा हूँ। इसलिये कह रहा हूँ। सतीषभाई त्योहार के मुख्य यजमान पद पर रहने के तैयार है। यह पैसे का विषय नही है। इस उम्र में भगवान का होकर रहना है। छोटे-बच्चे-बच्चियो को सत्संग में लाकर अपनी परम्परा और पूंजी को संरक्षित करना है। हमारे सतीषभाई छिप-छिप कर सेवा करते थे। विना कुछ कहे। मैने कहा खुले। हमसे दूसरे लोग प्रेरित हो इस लिये इन्होने मुझसे नही कहा था। पोल खोल दिया। इससे दूसरे को प्रेरणा मिलेगी। हमे तो अनादिकाल से रामानंद स्वामी थे। तब से ज्ञात है। पैसा से अधिक समय का महत्व है। इस उम्र में २० वर्ष के युवको को दौडाना। ग्राउन्ड उपर सेवा दे रहे थे। आपका आशीर्वाद, मेरी जेब तो खाली है। भगवान के सिवाय आशीर्वाद नही लेना है। भगवान के अलावा कही मस्तक नही रखना है। मै इतना तक मानता हूँ। सतीषभाई, अति आनंद आया। ये तो अपने हरिभक्त बैठे है। इसलिये बात किया हूँ।

लालजी महाराजश्री वती सभी का अभी से आमंतरण दे रहा हूँ। धन्यवाद।



प.पू. लालजी महाराजश्री : प.पू. लालजी महारजाश्री इस अवसर पर स्टेज पर सतीषभाई को आने को कहे। बोले सतीषभाई के सेवा समैया में भी थी।

हम सभी समैया मनाते है । इसी प्रकार अल्प समय में अवसर (जेतलपुर) इसके बाद त्योहार मनाना है। उत्सव मनाना अहमदाबाद की प्रणालिका है। हरि भक्तो को लाभ मिले इस लिये स्थायी रुप से उत्सव मनाते रहते है। इसका एक ही कारण है कि हरिभक्तो को सत्संग के साथ अधिक जोड सके । सत्संग जागृत रहे । विशेषकर आप जैसे हरिभक्तो का सहयोग मिलता रहे । संत, स्वयं सेवक और हरिभक्तो का परिश्रम एकत्र हो । तब सभी उत्सव सफल होता है। इस लिये त्योहार का पर्व अवश्य उल्लासपूर्वक मनाना है। सभी विशेषकर ध्यान दे।



ता. २५-०१-२०२६ प.पू. बड़े महाराजश्री : परम आदरणीय, परमश्रद्धेय तिलक बावा, आदरणीय संतो प्रिय सत्संगी भाईयों, मुझे केवल दो शब्द कहना है। आप का आभार व्यक्त करना है। आप यहाँ पर पधारे। आप का पुराना सम्बन्ध है। कई प्रसंग है। शायद इन्हे भी ज्ञात नही हो। इनके दादा के विषय में पू. बापुजी जग गद्दी पर विराजमान हुए थे। तब पू. बापुजी की उम्र १३ वर्ष की थी। इनके दादा जब गादी अभिषेक करने मंदिरे आये। तब ये बाल स्वरुप में थे। इसके बाद मुझे गद्दी पर बैठाये। तब मुझे पगडी पहनाने वाले इनके दादा थे। पू. बापुजी के साथ आत्मियता रखते थे। मेरे साथ भी रखते थे। अकेले तुकार कर बुलाते थे। सभा में आप कहकर बुलाते थे। अधिक प्रेम करते ते। ऐसी अधिक स्मृतियाँ है।

उन्होने बताया, स्वामिनारायण सम्प्रदाय के नींव में कृष्णभक्ति है। शिक्षापत्री में देखे तो कृष्ण परमात्मा के नाम का उल्लेख है। इतना किसी शब्द का उल्लेख नही है। शिक्षापत्री पढने का अनुरोध किये है। अपने सम्प्रदाय में महाराज ने आज्ञा किये है कि प्रतिदिन शिक्षापत्री का पाठ अवश्य करे। पाठ न कर सके तो श्रवण करे। यदि श्रवण नही तो पूजा अवश्य करे। वचनामृत में एक अलग धारा रखे है। यह भी न बने तो उपवास करे। इतनी महिमा शिक्षापत्री में की गयी है।

आह हमारे प्रसंग पर आये। शोभा बढाये। इस लिये आप को धन्यवाद। शेष बात आगे करेगे। जय स्वामिनारायण।

ता. २६-०१-२०२६ प.पू. बड़े महाराजश्री : हम सभी अलौकिक अवसर का आनंद ले रहे है। शिक्षापत्री सनातन सत्य है। जब हम स्कूल में पढते थे। तब शिक्षक **Iternal Truth** शब्द कहते थे । अर्थात् सार्वभौमिक सत्य उदाहरण सूर्य पूर्व में उगता है और पश्चिम में छिपता है। इसे सार्वभौमिक सत्य कहा जाता है । यह कभी नष्ट नही होता है । अभी है और भविष्य में भी रहेगा । तो शिक्षापत्री सनातन सत्य है।

शास्त्राकार ऐसा कहते है। संसार के वेद, पुराण एक तरफ एक पल्ले में भागवत रख दे तो उसका पलडा भारी पड जायेगा। उसी प्रकार अपने सम्प्रदाय

के सभी शास्त्र एक तरफ रखे । दूसरे पलडे में शिक्षापत्री रख दे तो उसका वजन बढ जायेगा । हमारे जीवन में शिक्षापत्री रहेगी । तो अपने सुख की **Unconditional** गेरेन्टी श्रीजी महाराज ने हम सभी को दिये है । जिम्मेदारी ले लिये है ।

बचपन में पंडित दुर्गानाथ झा हमें पढाते थे । बापूजी ने आज्ञा किये है । शिक्षापत्री के प्रारम्भ में शब्द आता है । नाना देश स्थितान.... मैने प्रश्न किया ? नाना देश अर्थात् क्या ? तो बताये कि अहमदाबाद देश, कच्छ देश, सौराष्ट्र देश इत्यादि । मैने कहा ऐसा कैसे ? और देश किस रुप में कहे गये ? देश तो भारत, पाकिस्तान, अमेरिका, अन्य युरोपीयदेश इसे देश कहते है । तो बोले, यहाँ पर देश समझना है । अभी के सन्दर्भ में कहे तो महाराजने वन विचरण प्रारम्भ किये । तब मोक्ष पीपल पर चढकर पश्चिम की तरफ देखे । पश्चिम की तरफ मुमुक्षुओ की तरफ दृष्टि पडी तो मेरा यह मानना है कि महाराज की दृष्टि सीमित नही है । वह किसी जगह पर रुके ऐसा नही है । महाराज की नजर पूरी पृथ्वी के गोलार्ध पर है । पूरी दुनिया धुमकर फिर पीछे आयी है । अभी ऐसा ही है । आज से ५०-६० वर्ष पहले बैठे हों और सत्संगी आये । हम पूछे आप कहाँ से आये है ? तो लोग बोलते है । मुंबई से आये है । कोई कहेगा मद्रास से आये है । कोई कहेगा कि कच्छ से आये है । कोई सौराष्ट्र से कहेगा की आये है । अभी हम इस समय म्युजियम में बैठे है । तो पूछते है कहाँ से आये तो लोग अमेरिका, आस्ट्रेलिया, युगान्डा, न्युझीलैण्ड बताते है । लेकिन हम देख रहे जब लालजी का समय आयेगा । जब ये लोगो से पूछेगे कि कहाँ से आये है । तब लोग कहेगे । हम मंगल गृह से आये है । चन्द्रमा तथा मार्श (मंगल) ग्रह से आये है । ऐसा समय आयेगा । आ सकता है ।

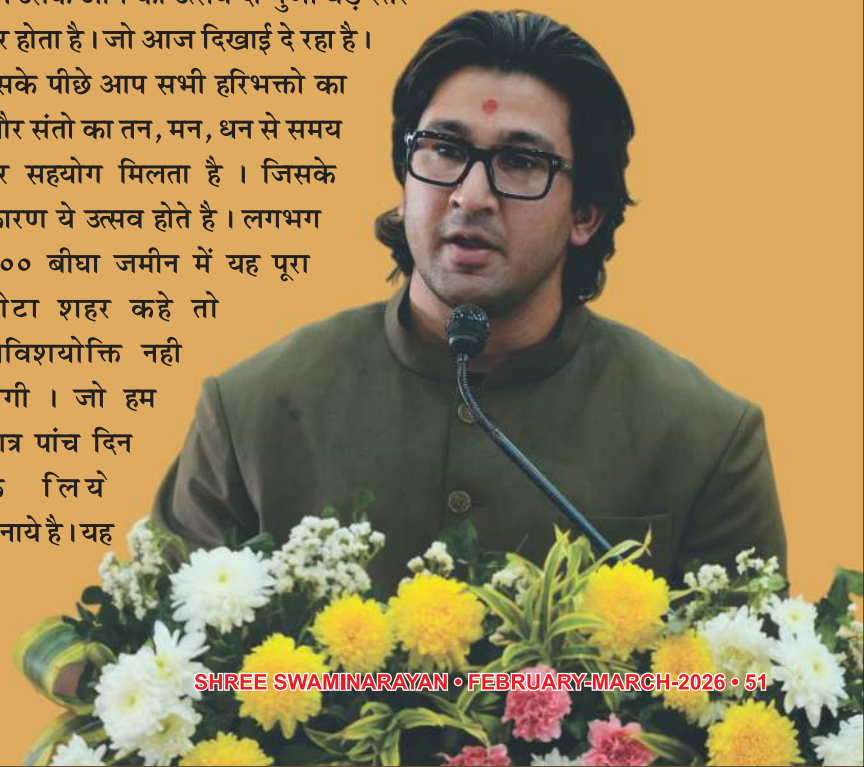
शिक्षापत्री पूरे संसार की माता है। शिक्षापत्री का अनुकरण करने पर कोई कभी भी दुखी नही होगा । तो जीवन में सदैव शिक्षापत्री का प्रयोग करे ।

आज अभी **Digital** (ईलेक्ट्रानिक प्रणाली से चलना) शो देखकर आया हूँ । खुशी से आँख में पानी आ गया । लालजी महाराजने सरस परिश्रम किये है । इनकी अन्तर से धन्यवाद देता हूँ । ऐसा उत्सव बोलना उत्सव नही होता । लेकिन यह मिलने और अनुभूति का उत्सव है । और हम भी दिव्य अनुभूति कर रहे है ।

आप सभी को धन्यवाद और आशीर्वाद है ।

प.पू. लालजी महाराजश्री : समैया का प्रारम्भ अभी शुरु हुई । ऐसा लग रहा है । अन्तिम शाम आनंद से बीत रही है । इतनी संख्या में हरिभक्त, आमंत्रित मेहमान तथा देश-विदेश से हरिभक्त पधारे है । इस उत्सव को मनाने का मुख्य कारण स्वामिनारायण के अपने मूलभूत सिद्धान्त जो दिपे है । उसे जागृत रखना है । प्रत्येक के मध्य जाने । इस लिये समैयो मना रहे है ।

अहमदाबाद देश की एक विशेष विशेषता रही है । कि कोई भी उत्सव होता है । उसके आगे का उत्सव दो गुणा बड़े स्तर पर होता है । जो आज दिखाई दे रहा है । इसके पीछे आप सभी हरिभक्तो का और संतो का तन, मन, धन से समय पर सहयोग मिलता है । जिसके कारण ये उत्सव होते है । लगभग २०० बीघा जमीन में यह पूरा छोटा शहर कहे तो अविशयोक्ति नही होगी । जो हम मात्र पांच दिन के लिये बनाये है । यह





तब हुआ जब स्वयं सेवक, संत, हरिभक्त सब एक साथ आये । एक होकर एक लक्ष्य बनाकर किस प्रकार भगवान का खुस किया जाये । और उत्सव द्वारा अधिक से अधिक लोगो को जोडा जा सके । स्वामिनारायण भगवानने अपने २१२ श्लोक की जो शिक्षापत्री दी है । वह प्रत्येक के पास जाये । इस लिये यह समैया मनाई जाती है ।

यहाँ पर टेक्नोलोजी भी है । साथ ही साथ सनातन हिन्दु वैदिक परम्परा भी है । **A.I. (Artificial Intelligence)** डोम है । उसी के सामने यज्ञ शाला भी है । महापूजा तथा बगल में वेदशाला भी है । तो यह जो मिश्रण है । और यह पूरा **Combination** है । जो अपनी मूलभूत परम्परा अपने संस्कार और सिद्धान्त और आधुनिक टेक्नोलोजी को एक करके कैसे बनाये है । आज के युवको को अपने सत्संग के पास, भगवान के समीपला सके । इसके लिये यह प्रयास है । इसकी सफलता हम लोग देख रहे है । बीते दिन प्रातः मुझे फोन आया था । सुबह सात बजे से प्रदर्शनी है । इसके सामने हरिभक्तो की कतार लगनी प्रारम्भ हो गया है । भगवान के चरित्र के उपर आप सभी का प्रेम है । इस लिये प्रदर्शनी अच्छी हुई है । पूरे परिसर में पंचदेव के मंदिर को लेकर रात्रि कार्यक्रम में आप सभी ने भाग लिया । हरिभक्त प्रसन्न हुए ।

महाराज ने शिक्षापत्री में स्पष्ट रुप से सभी के लिये नियम दिये है । कभी का इतिहास पढकर समझ सकते है । जिसने विरोध किया है । वे सभी दुःखी है । क्योंकि महाराज की यह आज्ञा है । महाराज के आज्ञा में कोई कमी नही रहती है । इस सिद्धान्त पर रहकर भजन भक्ति करे । जीव का कल्याण करे । ऐसा आज पवित्र दिन पर नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है ।

प.पू. महाराजश्री : आनंदपूर्वक आज समैया चल रहा है । इस सम्प्रदाय में किसी भी दिन समैया बंद नही होगी । भगवान मिले । अपने जीवन में भगवान पधारे । इसका आनंद ही समैयो है ।

लालजी महाराजश्रीने का । लडका है इस लिये अधिक प्रसंशा नही

करना है। लेकिन हरिप्रिय स्वामी ने बात कही यह तो सत्य ही है। मैं तो बैठा ही हूँ। खडा तो नही होना है। अर्थात जगह खाली कर देगे। लेकिन खडा नही होगे। हम तो बैठे ही रहेगे। जगह उनके लिये ही है। व्यवस्था उनके लिये की जा रही है। कुर्सी का मोह नही मात्र देव का मोह है। यह जो देव के प्रति जो मोह है। देव के अडचन रुप होने पर मुझे खडे होने मे समय नही लगेगा। यह मैं कह रहा हूँ।

जिस समैया छपैया में प्रोज्क्ट प्रारम्भ हुआ। तब लगभग १७३ करोड बजट था। **Inflation Index** को ले तो छपैया में सीमेन्ट सस्ती है। और रेत मँहगा है। अभी टीना बापू गये थे। रेत दूर से लाना पडता है। इसलिये मँहगी है। कुछ भी गिनो यह स्थल महाराज की जन्म स्थली है। इसलिये लालजी महाराज, बडे बापजी और मै तीनो लोग मिलकर निश्चित किये है। इस उत्सव के बाद जेतलपुर का तत्पश्चात धोलका का २०० वर्ष का उत्सव आयेगा इस में जो बचत होगी। लग भग देढ वर्ष में यह प्रोजेक्ट पूरा हो जायेगी। की अपग्रेड वाले प्लान है। यह बचत छपैया के लिये, घनश्याम महाराज के लिये प्योग करना है। अपना उद्भव स्थल है। यह नरनारायणदेव का आसरा है। हम सभी भाग्यशाली है। एक नरनारायणदेव दूसरा छपैया का स्थान यह अहमदाबाद देश को मिला है। दूसरे के पास नही है। इस का हम सभी को गौरव है।

उत्सव तो होते रहना है। आप सभी लोग जो परिश्रम किये है। धन्यवाद कहे तो खराब लगेगा। लेकिन यह अपना है। अन्ततः भगवान को खुश करने के लिये करते है। शेष किसी को खुश नही करना है। भगवान के भक्त खुश हो। इससे बड़ी कोई उपलब्धि नही है। यह महाराज के अपने बचन है।

शिक्षापत्री हम सभी को प्राप्त है। शिक्षापत्री की बात कहु। आप सभी को कोई शिक्षापत्री के लिये संविधान शब्द का प्रयोग करता हो तो पहले सुन ले। शिक्षापत्री सम्प्रदाय का संविधान नही है। देश विभाग के लेख सम्प्रदाय का संविधान है। जो पढे नही है। पढ लेगे। देश विभाग के लेख में क्या आया है। यह समझना जरुरी है। शिक्षापत्री हमारे जीवन का संविधान है। आचार्य से लेकर संत, ब्रह्मचारी, पालासे लेकर हरिभक्त बहने, भाइयो, सधवा-विधवा सभी का धर्म इस शिक्षापत्री में आता है। इस लिये वह जीवन का संविधान है। और सम्प्रदाय का संविधान देश विभाग का लेख है। शायद मन में ग्रन्थि बनी हो तो उसे दूर कर दे। अधिक बोलने पर असत्य भी सत्य जैसे हो जाता है। यह नियम है। इस लिये शिक्षापत्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय का संविधान नही है। शिक्षापत्री जीवन का संविधान है। फिर एक बार बता रहा हूँ कि स्वामिनारायण संप्रदाय का संविधान देश विभाग का लेख है। यह हमे विशेषकर ध्यान रखना है। लालजी महाराज विशेष मेहनत करके प्रिन्ट करके पहले के प्रसंग में देश-विभाग का लेख सब के घर जाये। ऐसा प्रयास किये थे। यदि नही है तो अपने मंदिर से पहुंचाने का कष्ट करे। इसका भी **Digitalization** (डीजीटल टेकन्लाजी का प्रयोग करके) आडिया (श्राव्य) फाईल बना कर सभी के पास पहुँचा दे। आना पत्र की अभी बात की गयी। ये सभी वस्तुए मूल आज्ञा देश विभाग के लेख में आते है। जिसके कारण हम सभी स्वच्छ है। देश के संविधान का यदि पालन न हो तो देस में अराजकता पैदा हो जाती है। अपना संविधान देशविभाग का लेख है। इसका कोई उपयोग नही करे तो क्या होगा ?

विशेष, अब मै ईच्छा करुगा ? बडे महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करे। इनके आशीर्वाद में सभी का आशीर्वाद आ जाता है।

प.पू. बड़े महाराजश्री : यह उत्सव ऐसा मनाया गया है कि इसका स्वाद महिनो तक, वर्षो तक जाने वाला नही है। जैसे अच्छा भोजन ग्रहण करे। तत्पश्चात मुखवास खाने पर भी स्वाद नही जाता है। जेतलपुर का जब तक उत्सव आयेगा तब तक स्वाद जाने वाला नही है।

दाताओने योगदान दिया है। छोटी-बड़ी सेवा, स्वयं सेवको सहित सभी को धन्यवाद। विशेषकर लालजी महाराज का मार्गदर्शन था। अधिक सूझ-बूझ वाला मार्गदर्शन था। उन्हे अन्तर से आशीर्वाद दे रहा हूँ। एक के बाद

एक ऐसा उत्सव इनके हाथो द्वारा हो । और सम्प्रदाय में नरनारायणदेव गादी को अधिक यश कीर्ति दे । स्वयं भी यश कीर्ति प्राप्त करे ।

कुछ दिन पहले मुझसे कोई पूछा था कि वचनामृत में महाराज ने कहा, मूर्ति अखंड सम्भाल कर रखे । इससे बडी कोई उपलब्धी नही है । मूर्ति अखंड कैसे सम्भाल कर रखे ? अपने गाडी चलाते है । दुकान में बैठे रहते है । व्यवसाय करते है । तो इसका सरल उपाय है । शिक्षापत्री के आदेशो को मानने के उपर मन की अखंड वृत्ति होगी तो महाराज की मूर्ति में अखंड वृत्ति रहे बराबर है । सदैव शिक्षापत्री के आदेश का पालन ध्यान दे । और सत्संग का साथ रखे । शिक्षापत्री के अन्तिम २१२ श्लोक में महाराजने आशीर्वाद दिया है । इस सब का फल तब मिलता है । जब २११ श्लोको हम पालन करते है ।

अभी महाराजने अच्छी बात कही है । शिक्षात्री एक धार्मिक पुस्तक नही है । यह जीवन जीने की कला है । अन्य सम्प्रदाय का व्यक्तित भी यदि शिक्षापत्री के पेज को पढेगा तो उसे लगेगा । यह हमारे ही सम्प्रदाय की बात लिखी है । ऐसी अच्छी शिक्षापत्री महाराजने अपने को दिये है ।

शिक्षापत्री हमारे जीवन में अखंड रहे । उसके आज्ञा का पालन करे । सर्वावतारी श्रीहरि की खुशी इतना कहकर विराम दे रहा हूँ ।

ता. २७-०१-२०२६ प.पू. लालजी महाराजश्री : माननीय भारत के गृहमंत्री और सहकारिता मंत्री अमितभाई शाहजी, गुजरात राज्य के उपमुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी, भाजपा पार्टी के अहमदाबाद प्रदेश प्रचारक प्रेरकभाई, सभी हरिभक्त, संत, देखते देखते "समैयो" का पाँच दिन पूरा हो गया । और पता भी नही चला । अमित शाह को धन्यवाद तथा शाहजी को आभार व्यक्त करते है । क्योकि आप समय निकालकर आये । इसकी व्यस्तता आप सभी जानते ही है । यह अधिक व्यस्त रहते है । २६ तारीख का कार्यक्रम दिल्ली में पूर्ण करके अहमदाबाद कुछ घंटे के लिये मात्र अपने इस कार्यक्रम के लिये आये है । कई संतो और हरिभक्तो की ईच्छा है कि इस अवसर के प्रति के समैयो हमारी अध्यक्षता में मनाया गया । लेकिन यह धन्यवाद मुझे नही चाहिए । क्योकि जब पूरी टीम एक होकर कार्य करे । तथा उसमें नरनारायणदेव की शक्ति कार्य करती है । इस लिये ऐसा उत्सव मना सकते है ।

आज के पवित्र अवसर पर मुझे मात्र दो बाते कहनी है । एक तो पूरा समैयो सभा मंडप आप देख रहे है । यह बाहर रखे गये सौर ऊर्जा के प्लान्ट से संचालित है । जो प्लान्ट आप सभी हरिभक्त पाँच दिन से देख रहे है । इसके बाद भी पर्यावरण को सुरक्षित करने के लिये कोई कार्य किये गये है । अहमदाबाद में पाँच लाख वृक्ष कालुपुर मंदिर की तरफ से दिया जायेगा । इसका प्रारम्भ कल से होगा । साथ ही साथ २०० दिन तक प्रति दिन २१२ गरीब भूखे लोगो को अपने ५६ मंदिरो द्वारा भोजन दिया जायेगा । यह प्रवृत्ति कालुपुर मंदिर से आजीवन प्रारम्भ की जायेगी । यह दो विशेष मानव सेवा तथा पर्यावरण संरक्षण का कार्य है । यह छोटा सा प्रयास कालुपुर मंदिर की तरफ से आप सभी को प्रस्तुत किया जा रहा है ।

इतना कहकर, फिर एकबार धन्यवाद और आशीर्वाद मिले ।

प.पू. महाराजश्री : बेटा, एक मिनट, तुम आगे आ जाओ । उसी स्थान पर, बापजी आप, अमितभाई, हर्षभाई, प्रेरकभाई आप सभी मिलकर इनका (प.पू. लालजी महाराजश्री) का सम्मान करे । कारण पुरा आयोजन इनके द्वारा किया गाय है । (चारो लोगो ने क्रमशः प.पू. लालजी महाराजश्री को हार पहनाये । प.पू. बड़े महाराजश्रीने भेट कर आशीर्वाद दिया । प.पू. लालजी महराजश्रीने तुरंत बड़े बापुजी का चरण स्पर्श किये । यह दर्शन अद्‌भुत अविस्मरणीय था) आज के दिन गौरव होगा एक पिता के रुप में । धन्यवाद साहब, बैठिये बैठिये

आप का स्वागत है, अमितभाई, हर्षभाई, प्रेरकभाई अधिक बोलना नही चाहते है। अभी की एक घटना है। साहब जब आते है तो प्रोटोकाल लग जाता है। यहाँ पर कुछ आगे - पीछे करना पड़ जाता है। राजद्वार से आये है तो प्रोटोकाल लागू ही पडता है। हमने साहब को फोन किया। साहबने कहा मिलने के लिये आयेगे । इसके बाद मै बड़े बापजी और लालजी महाराजश्री से मिलने उनके घर गया। ताकि हैरान कम हो। हमे भी हैरान कम होना पडेगा। लेकिन एक बात अंतर में उतर गयी। जब भी बात हुई। तब अपनापन - प्रेम यह तो पुराना सम्बध है। इसमें दो मत नही है।

लेकिन जो बात हृदय को स्पर्श कर गयी। हम सभी काफी पीकर बड़े बापजी निकले। तब आपने जयभाई से बोले बड़े बापजी को छोडकर आओ। सीढी उतरते जयभाई बापजी का हाथ पकडकर उतारे और कहे कि आज मेरी भाग्य है कि बड़े बापजी का हाथ पकडकर सीढी से उतारा।

दूसरी बात यह है साहब यह कोई अतिशयोक्ति नही है। प्रसंशा करने के लिये नही कर रहा हूँ। सीधे-सीधे कहता हूँ। (सभाजनो को सम्बोधित करके) सीढी उतरकर नीचे आया तभी उस समय एक याचक ब्राह्मण वहाँ पर बैठा था। हर्षभाई मुझे अन्दर से स्पर्श कर गया। जयभाई सीढी उतरकर बोले कि पापाने मुझे विशेषकर कहा है कि किसी ब्राहमण का दिल दुःखाना नही । किसी भी व्यक्ति का दिल दुःखी मत करना । यदि शिक्षापत्री का संस्कार बाहर खोजना हो तो अपने घर से प्रारम्भ करना पडेगा। गर्व की बात यह है कि भारत सरकार के गृहमंत्री मानो, या अपने परिवार का सदस्य मानो इस लोगो के साथ अति आनंद आया और प्रेरकभाई तो सरस सेन्स आफ ह्यूमर (हसमुख स्वभा) सभी का है। यहाँ पर इतने मेहमान पधारे है। अच्छा समय निकालकर, फिर भी **Charity Begins at Home** (परोपकार का प्रारम्भ घर से करे) वातावरण घर में होना चाहिए। तब शिक्षापत्री का उत्सव मनाया है। स्वागत तो लालजी महाराज को करना है।

यह वातावरण जो अपने घर का है। यह एक उदाहरण है। भारत के लिये हिन्दू संस्कृति के लिये जो सीखने योग्य है। जहाँ पर यह संस्कार रहेगा। वही पर सुरक्षा रहेगी। पूरे भारत देश में बड़े एजेन्डा के साथ कार्य हो रहा है। पूरे संसार में साहब की ख्याति फैल रही है।

हर्षभाई आप का स्वागत है। आप उपमुख्यमंत्री बबने के बाद पहली बार मिले है। आप से एपयमेन्ट हमने माँगा था । आपने मुझे दिया नही था । मजाक कर रहा हूँ। यह हँसने की बात है। साहब तुरंत फोन उठाते है । आप सभी पधारे । मेरा परिवार एकत्र हुआ ऐसा लगता है । साहब **Thanks** (आभार) खूब-खूब धन्यवाद।



लोज्जन प्रसाद















सभी की "समैयो" सब की "सेवा"

- स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा अपने भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की अध्यक्षता में तथा पूरे धर्मकुल के सानिध्य में शिक्षापत्री २०० वर्ष की "समैयो" महामहोत्सव ता. २३ जनवरी २०२६ से ता. २३ जनवरी २०२६ तक जमीयतपुरा प्रभा हनुमानजी के पास "पर्व" के ग्राउन्ड में उल्लास पूर्वक मनाया गया था। देश-विदेश के लाखो हरिभक्त पाँच दिन तक "समैयो" का आनंद लिये। "समैयो" की तैयारी विगत डेढ़ वर्ष से चल रही थी। देश-विदेश के हजारो हरिभक्त इस में सेवा देकर महालाभ लिये। श्रमयज्ञ की सेवा अद्वितीय और सराहनीय थी। पूरा धर्मकुल प्रतिदिन पधारकर संतो एवम् हरिभक्तो का मार्गदर्शन किये थे। तथा सेवा देने वालो को प्रोत्साहन देते थे।

"समैयो" मे छोटी-बड़ी सेवा या छोटे-बड़े हरिभक्तो का प्रभाव नही था। वहाँ पर सभी लोग अपने घर के प्रसंग के समान रात-दिन सेवा दिये थे। परमकृपालु श्री नरनारायणदेव और धर्मकुल कैसे खुश रहे। सबकी ईच्छा यही थी। अपने किसी भी उत्सव में कोई भी हरिभक्त अपने नाम की ईच्छा नही रखता है। भगवान के चोपडे मे सबका नाम लिखा जा रहा है। प्रत्येक संत-हरिभक्त सांख्ययोगी कर्मयोगी बहने आदि ने सेवा दी थी। यह भूला नही जा सकता है। सेवा देने वाले सभी संत-भक्तो को परमकृपालु श्री नरनारायणदेव सभी प्रकार से सुखी और मंगल करे। ऐसी भगवान श्री नरनारायणदेव के चरण कमल में वंदना है।



राजनीतिक महानुभावो का सम्मान



श्री नरहरि अमीन



श्री कांतिभाई अमृतिया – मंत्रीश्री



श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया



श्री प्रेरकभाई शाह – अहमदाबाद शहर भाजपा प्रमुख



श्री भूपेन्द्रभाई चुडासमा



श्री मयंकभाई नायक – संसद सदस्यश्री



श्री जीतुभाई वाघाणी



श्री अल्पेशभाई ठाकर



श्री विनुभाई रादडिया

राजनीतिक महानुभावो का सम्मान



श्री नितीनभाई पटेल



श्री रत्नाकरजी



श्री मुकेशभाई पटेल - अध्यश्री अ.म्यु.को.



श्री धरमशीभाई देसाई - चेयरमैनश्री ए.एम.टी.एस.

















''तारक महेता का उल्टा चश्मा'' सीरियल के कलाकार

यजमानश्री लोको का सम्मान







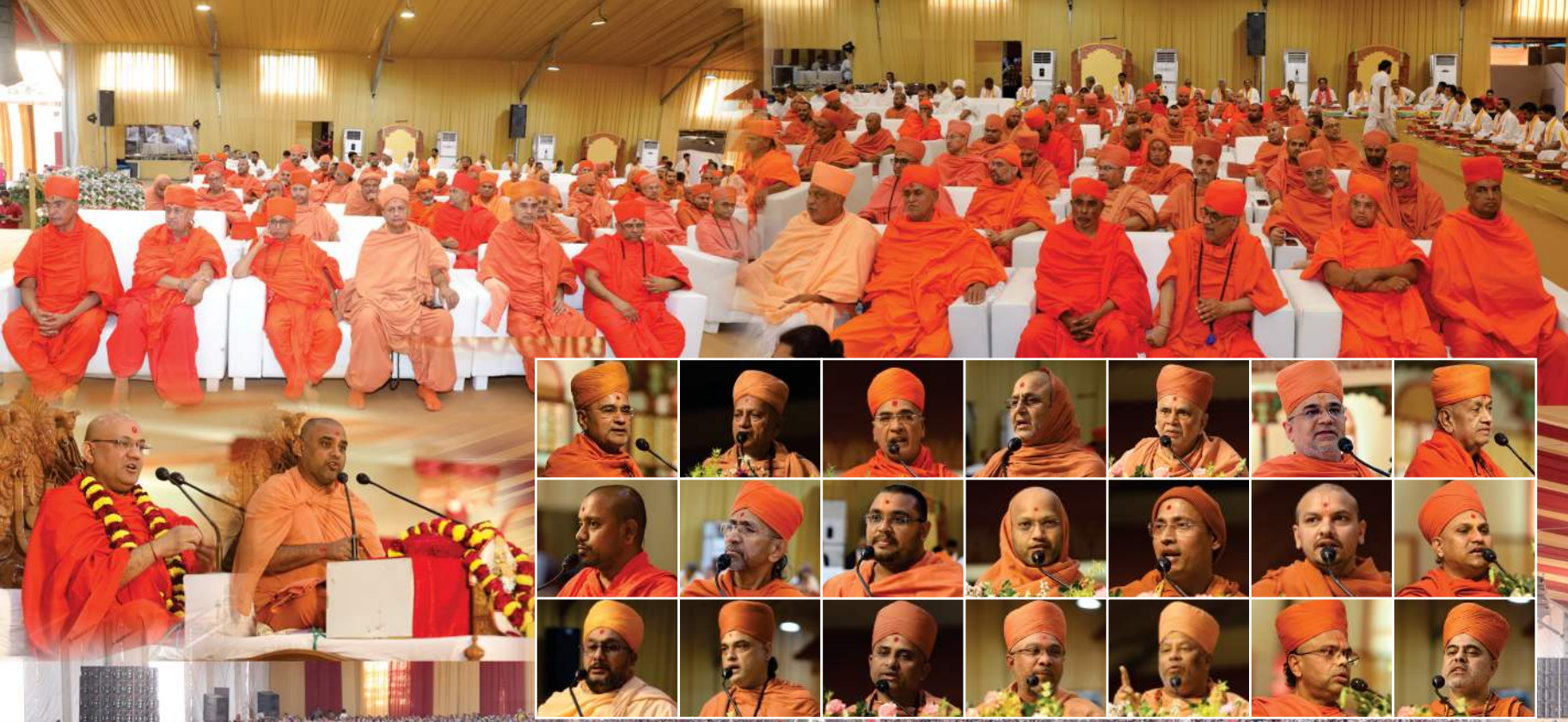



यजमानश्री लोको का सम्मान



यजमानश्री लोको का सम्मान









સમૈયાના ગ્રાઉન્ડ પર ફરતા ફરતા

विश्व का सर्वप्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का २०४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव महोत्सव

विश्व का सर्व प्रथम महामंदिर अहमदाबाद में भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभु ने स्वयं से प्रतिष्ठित स्वस्वरुप परमकृपालु श्री नरनारायणआदि देवो का २०४ वाँ पाटोत्सव महामहोत्सव फाल्गुन सुद-३ ता. २०-२-२०२६ शुक्रवार प्रातः ६-३० से ७-०० बजे तक श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप के करकमल से विधिवत पूर्ण किया गया।

प्रसंगोचित सभा में पाटोत्सव के यशश्वी यजमान प.भ. अ.नि. सोमाभाई विरचंददास पटेल, अ.नि. मंगुबेन एस. पटेल का पूरा परिवार (इटादरा) अहमदाबाद, प.भ. नागदान बापा सोनी सह परिवार (राजुलावाले), प.भ. वसंतीबेन बाबुभाई पटेल, प.भ. बाबुभाई वाघजीभाई पटेल परिवार (अहमदाबाद) आदि सभी धर्मकुल के हाथो से सम्मान और यजमान परिवारो ने धर्मकुल पूजन का महालाभ उठाये थे। और आशीर्वाद प्राप्त किये। अहमदाबाद मंदिर, मूली मंदिर के पू. महंत स्वामी तथा शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी (अयोध्या-वडनगर महंतश्री), शा. स्वा. गुरुप्रसाददासजी, महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी (नारणपुरा) और राजुला मंदिर के संतश्री आदि संत श्री नरनारायणदेव की महिमा बताये थे। अंत में प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया था। प.पू. लालजी महाराजश्रीने प्रसादम् (प्रतिदिन स्थायी रुपसे भूखे लोगो को भोजन देना) का उद्घाटन किये थे। इसके बाद अन्नकूट आरती उतारे थे।(कोठारी स्वामी कालुपुर)

मूलीधाम मंदिर के नये महंतश्री

मूलीधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर के नये महंत स्वामी स.गु. स्वामी कृष्णवल्लभदासजी गुरु स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी को नियुक्त किया गया है।



भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "अवगुणो से दूर रहे"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

भगवान ने करुणा करके हम सभी को दुर्लभ मानव शरीर दिये है। यह बहुत बड़ी कृपा है। लेकिन यह पद अनिश्चित है। कुछ पता नही कितने समय के लिये यह शरीर मिला है। समय अवधि पूरे ब्रह्मांड में किसी को ज्ञात नही है। हम किसी की वस्तु प्रयोग करने के लिये लाते है तो उसकी समयावधि का हमे ज्ञान होता है। समयावधि पूर्ण होने पर वस्तु को वापस कर देते है। यह मानव शरीर कब पीछे ले लेगे हमे ज्ञात नही है। इस लिये रोज तैयारी रखना पड़ता है। मृत्यु का डर नही होना चाहिए। इस शरीर का लाभ लेना चाहिए। एक-एक क्षण का सदुपयोग करना चाहिए। २४ घंटे भगवान का दर्शन करके बैठे तो यह बात अच्छी नही है। इस लिये नाम स्मरण की महिमा कही गयी है। हम जितने घंटे जाते उतने घंटे भगवान के नाम का जप करते रहना चाहिए। कलियुग मे नाम स्मरण वरदान है। मात्र नाम स्मरण से कल्याण हो जाता है। बच्चे-बच्चियाँ की शादी हो जाने के बाद अथवा निवृत्त हो जावे बाद में भजन करेगे। ऐसा नही रखे। क्योकि कल ? क्या होने वाला है। किसी को ज्ञात नही है। वृद्धावस्था में हाथ पैर काम करे या ना करे। लेकिन भगवान आप सभी का स्वास्थ्य अच्छा रखे। लेकिन वर्तमान समय में सभी लाभ ले लेना चाहिए। क्योकि ? दुःख अचानक आता है। कौन ऐसा मानव है जो दुःख की माँग करता है। सुख की माँग सभी लोग करते है। कुछ को ऐसा लगता है कि मै ऐसा काम करु की दुःख आये ? ऐसा कोई भगवान से नही माँगता है। प्रारब्ध में जो लिखा होगा। वही भोगना पडता है। सुख की माँग भगवान से करने पर यथोचित समय पर सुख देते है। दुःख के समय में आदमी को 'बुद्धि' और 'विवेक' का प्रयोग करना चाहिए। यही परीक्षा की घडी होती है। भगवान के पास से सहन करने की शक्ति माँगना चाहिए। दूसरी माँग नही करना चाहिए। प्रारब्ध में जो होगा। वह प्राप्त होगा। क्या माँगे ? जैसे भक्त प्रहलाद ने नृसिंह अवतार में भगवानने माँगने के लिये कहा तो भक्त प्रहलादने कहा कि 'मुझे कुछ माँगने की ईच्छा न आये। ऐसा वरदान दे प्रभु ! ऐसा माँग करे की किसी भी अवस्था में पैर, मन डगमाये नही। अविश्वास नही आवे। अंतकरण शुद्द रखे। स्वयं के अन्दर का अवगुण स्वयं दूर करना चाहिए। सभी अवगुण खराब है। जो अधिक हानि करते है। इसमें मुख्यतीन है। सबसे पहला यह है कि असत्य नही बोलना चाहिए। एक असत्य को छिपाने के लिये कई असत्य बोलना पडता है। इस प्रकार खराब कृत्य करना पडता है। असत्य बोलने से अपने अंदर जो धर्म होता है। वह कम हो जाता है। धर्मराज युधिष्ठिर को धर्मराज की पदवी मिली थी। वे धर्म का पालन करते थे। सत्यनिष्ठ थे। इस लिये धर्मराज कहे जाते थे। उनके पास सत्य की इतनी शक्ति थी। यदि वो किसी के सामने क्रोध कर दे वह भष्म हो सकता था। इतने शक्तिशाली थे। जब महाभारत हुआ तो पांडवो की इच्छा यह थी कि हमारी जीत होगी। सामने कौरवो मे द्रोणाचार्य अति शक्ति शाली थे। जब तक वह जिंदा रहते तब तक पांडव की जीत अनिश्चित थी। द्रोणाचार्य गुरु थे। गुरु को मारा नही जा सकता था। श्रीकृष्ण भगवान साम, दंण्ड दाम भेद सभी नीतियो के जानकार थे। यह सब लागू करके अपने पक्ष की जीत चाहते थे।

द्रोणाचार्य को अपने पुत्र पर असीम मोह था । श्रीकृष्ण को लगा यदि उसे कुछ किया जाय तो द्रोणाचार्य का वध किया जा सकता है । सभी लोग मिलकर आयोजन किये । इसमें श्रीकृष्ण भी जुडे । युद्ध में अश्वत्थामा नाम का हाथी भी था । इस लिये निश्चित किये कि हाथी के मरने पर तब बोले कि ''अश्वत्थामा मृत्यु को प्राप्त किया । जब युद्ध में अश्वत्थामा नाम का हाथी मर गया । तब भीम ने जोर से आवाज लगाये ''अश्वत्थामा मर गया ।'' द्रोणाचार्य को यह समाचार प्राप्त हुआ । लेकिन अश्वत्थामा चिरंजीवी थे । इस लिये मृत्यु नही होगी । द्रोणाचार्य भ्रम में पड गये । श्रीकृष्ण से भी नही पूछा जा सकता है । विचार किये कि किससे पूछा जाये ? केवल युधिष्ठिर सत्यनिष्ठ थे । इस लिये युधिष्ठिर से पूछे : युधिष्ठिर ने कहा ''अश्वत्थामा हनः नरो वा कुंजरो वा'' अश्वत्थामा मारा गया लेकिन नर (मनुष्य) या हाथी यह पता नही । युधिष्ठिर के उत्तर देते समय कृष्ण भगवान ने जान बूझकर भारी शंखनाद कर दिये । जिससे ''नरो वा कुंजरोवा'' सुनाई नहीं दिया । युधिष्ठिर सब जानकारी नही लिये । यहि कहे होते की अश्वत्थामा नाम का हाथी मरा है । तो पूरा कहना कहते है । सत्य तब पूर्ण होता है जब निश्छल और बिना कपट से बोला जाये । युधिष्ठिर ने बोला यह कपट है । उन्हे पता था कि वह मनुष्य नही है । वह हाथी मरा है । सत्य अश्वत्थामा नाम का हाथी मरा यह कहना था । युधिष्ठिर झूठ बोले इस कारण से उनका बल और तेज समाप्त हो गया । इससे संचित कर्म इकट्ठा होता है । संचित जब प्रारब्ध बनता है भोगते है । दूसरा पुरुष और् स्त्री को व्यभिचारी नही होना चाहिए। स्त्री परगमन, पुरुष परगमन नही होना चाहिए । चरित्र हीनता बडी कमी है । तीसरा यह है कि क्रोध नही करना चाहिए । किसी के विषय में अपशब्द नही बोलना चाहिए। दिल के दुखाने से पाप लगता है । संचित कर्म एकत्र होकर प्रारब्ध बनता है । वह स्वयं को भोगना पडता है ।

हम जो भजन भक्ति करते है । वह अपने कल्याण के लिये करते है । इस के बदले में कुछ माँगना नही चाहिए । हमें भगवान से कहना चाहिए । यह आपस में व्यापार कहा जायेगा । भगवान के प्रति समर्पण की भावना रखना चाहिए। शुद्द प्रेम करने पर मिलेगे । शुद्ध प्रेम करने से स्वयं समर्पण आ जाता है । भगवान के सिवाय अपना अस्तित्व ही नही है । ऐसा विचार कुछ समय के लिये आता है । फिर चला जाता है । यह आप की बात नही है । आप सभी ऐसे ही है । नही तो आप यहाँ पर नही बैठते । यह जो बराबर सत्संग नही करते है उनके लिये है । कई लोगो को लगता है घर पर पढले सत्संग में जाने की क्या आवश्यकता है ? अपने पास पहले का बीज फल है । इसलिये यहाँ पर बैठे है । भगवान बिना जीव कैसा होता है । जैसे माँ बिना बालक । स्वयं के माँ के पालन में तथा दूसरे के पालन में अंतर होता है । माता बच्चे की पूरी जिम्मेदारी ले लेती है । बालक जब छोटा होता है तो रोने पर माँ को ज्ञात हो जाता है कि बच्चे की क्या आवश्यकता है ? क्योकि बालक बोल नही सकता है । ईशारा भी नही कर सकता है । लेकिन माँ समझ जाती है कि बच्चे को भूख लगी है । सब जिम्मेदारी लेकर बड़े होने तक उसका लालन-पालन करती है । विना माता-पिता के बच्चो का भी पोषण हो जाता है । लेकिन उनकी जिम्मेदारी कोई नही लेता है । उसी प्रकार भगवान का नाम नही लेने वाले जीव माता-पिता वाले नही है । आप सभी को नरनारायणदेव की शरणागति स्वीकार किये है । इस लिये सारी जिम्मेदारी नरनारायण ले रखे है । बालक की तरह निखालस बन कर रहे । तो महाराज माता की तरह आप पर ध्यान रखेगे । आप के आँसु से भगवान को ज्ञात हो जायेगा । लेकिन आँसु सत्य होना चाहिए । माता की तरह भगवान को भी पता चल जाता है । कि सही मे रो रहा है । या ढोंग कर रहा है । इस लिये निखालस होकर सच्चे मन से समर्पित रहे । इसमें सोचने की कोई राह नही है ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

सभी हरिभक्तो की सुविधा के लिये

प.पू. आचार्य महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के संकल्प से अब

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के नये स्थापना दिन हर वर्ष दि. २९ मार्च के दिन पर मनाया जायेगा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री यज्ञ की सूची-जनवरी-२०२६

ता. १८-०१-२०२६ प.भ. बाबुलाल त्रिकमलाल ठक्कर परिवार - विरमगाम।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची

(जनवरी-२०२६)

ता. ०४-०१-२०२६ प.भ.श्री रामभाई मगनदास पटेल - नवा वाडज - वर्त. केनेडा।

ता. १६-०१-२०२६ प.भ.श्री हर्ष महेन्द्रभाई शुक्ल - आस्ट्रेलीया।

ता. २२-०१-२०२६ प.भ.श्री घनश्यामभाई गोविंदभाई कानाणी - सीडनी आस्ट्रेलीया।

(फरवरी-२०२६)

ता. ०१-०२-२०२६ प.भ.श्री असितकुमार विष्णुभाई पटेल - डांगरवावाले वर्त. यु.एस.एस.।

ता. २१-०२-२०२६ प.भ.श्री जगदीशभाई आत्माराम पटेल - शिकागो।

ता. २२-०२-२०२६ प.भ.श्री उदयनभाई अविनाशभाई महाराजा - विसनगर।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची - फरवरी-२०२६

रू। २,५१,०००/- प.भ.श्री नीरव भास्करभाई पटेल - अहमदाबाद।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

संप्रदाय में एक मात्र व्यस्था श्री स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा / महाभिषेक कराने के लिये संपर्क करे।

म्युजियम मोबाईल दासभाई (बापुनगर) - ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.in •

email: swaminarayanmuseum@gmail.com







''समैयो'' में सेवा देने वाले स्वयं सेवको का सम्मान समारंभ के अवसर पर आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री





जेतलपुरधाम २०० वर्ष के भगवान मिले ''अवसर'' के प्रसंग पर आयोजित विजय स्तंभ की पूजा करते तथा कंकोत्री लेखन करते प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री





प्रतापपुरा गाँव में पारायण के अवसर पर निज मंदिर में आरती उतारते तथा सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री



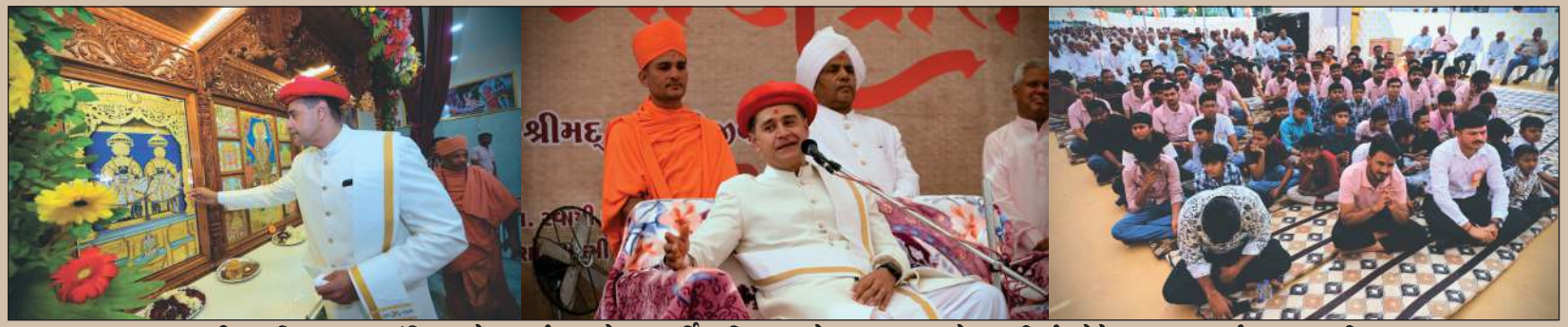


कालुपुर मंदिर में प्रत्येक पूर्णिमा को नियमित की जाने वाली सत्संग सभा में धर्मकुल का दर्शन



श्री स्वामिनारायण मंदिर भारासर कच्छ, मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते तथा सभा में बच्चो के साथ प.पू. आचार्य महाराजश्री





श्री स्वामिनारायण मंदिर अरोडा (ईडर प्रदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा करते तथा सभा को आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री



वाली (राज.) श्री स्वामिनारायण सत्संग मंडल मुंबई सभा में शाकोत्सव करते तथा आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री



श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा बाल स्वरुप घनश्याम महाराज की स्वर्ण जयंती महोत्सव पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते तथा सभा को आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री





श्री स्वामिनारायण मंदिर - भुज ओकलैण्ड-न्युजीलैण्ड नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते और श्री स्वामिनारायण मंदिर ओकलैण्ड (आई.एस.एस.ओ.) मंदिर में पाटोत्सव के अवसर पर अभिषेक करते प.पू. आचार्य महाराजश्री





श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा पाटोत्सव के अवसर पर अन्नकूट आरती उतारते तथा सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री



छपैयाधाम में नया रेलवे स्टेशन का उद्घाटन करते प.पू. बड़े महाराजश्री







श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (वांटो), शतामृत पाटोत्सव के अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा शाकोत्सव करते प.पू. लालजी महाराजश्री

आगामी उत्सव

चैत्र सुद-९ शुक्रवार ता. २७-३-२०२६ रामनवमी-श्रीहरि प्राकट्य दिवस अहमदाबाद मंदिर अक्षरभुवन बाल स्वरूप घनश्याम महाराज का पाटोत्सव, दोपहर १२ बजे श्रीराम जन्मोत्सव आरती, रात्रि १०-१० श्रीहरि प्राकट्योत्सव आरती अहमदाबाद कालुपुर मंदिर में अखंड धून । ● चैत्र सुद-११ रविवार ता. २९-३-२०२६ कामदा एकादशी उपवास, श्री स्वामिनारायण म्युजियम स्थापना दिवस । ● चैत्र सुद-१५ ता. २-४-२०२६ गुरुवार मुकुटोत्सव पूनम, श्री हनुमान जयंती। ● चैत्र वद-२ ता. ४-४-२०२६ शनिवार मांडवी (कच्छ) श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव । ● चैत्र वद-३ ता. ५-४-२०२६ रविवार प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का प्रागट्योत्सव (सं. २०००) ● चैत्र वद-७ ता. ९-४-२०२६ गुरुवार भुज मंदिर श्री राधाकृष्णदेव का पाटोत्सव । ● चैत्र वद-११ ता. १३-४-२०२६ सोमवार वरूथिनी एकादशी उपवास । ● चैत्र वद-३० ता. १४-४-२०२६ शुक्रवार दर्श अमावास्या । ● वैशाख सुद-२ ता. १९-४-२०२६ रविवार अखात्रीज, अक्षय तृतिया - श्री परशुराम जयंती, उनावा मंदिर का पाटोत्सव, ठाकुरजी को चंदन का लेप वाला वाधा ।

श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रकाशन की मालिकी के सन्दर्भ में ।

From-IV (see Rule : 8)

१.	प्रकाशन	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१
२.	प्रकाशन समय	:	प्रति मास
३.	मुद्रक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१
४.	संपादक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१
५.	मालिक	:	श्री नरनारायणदेव गादी के अधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१

मैं शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी यह स्पष्ट कर रहा हूं कि ऊपर दी गई बातें मेरी जानकारी और समझ के अनुसार सत्य है।

हस्ताक्षर : शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१ (प्रकाशक की साईन)

SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE - KALUPUR

As per new instructions from Government of India, all Abroad Donations will be routed through State Bank of India, Main Branch, New Delhi Only.

At the time of doing any Foreign Remittance (Please send us your full details, Like - Donor Name, Address, Mobile No. for further submission to SBI in FEMA Declaration, As per their Instruction)

Information for foregin donation towards Shree Narnarayan Mandir Trust for all Satsangi, who are belongs to abroad (out side India) remit their donation to Shree Narnarayan Mandir Trust, Kalupur, Ahmedabad. Only in Our FCRA A/c. Details as under.

BANK NAME	:	STATE BANK OF INDIA
BRANCH	:	FCRA CELL, MAIN BRANCH, SANSAD MARG, NEW DELHI-110001
BENEFICIARY NAME	:	SHREE NARNARAYAN MANDIR TRUST
SAVING BANK A/C. NO.	:	401 890 15898
IFS CODE	:	SBIN0000691
SWIFT CODE	:	SBININBB104
BENEFICIARY ADDREES	:	SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE, KALUPUR, AHMEDABAD, GUJARAT, INDIA

Special instruction for remittance made through NRE Cheque in Indian Rs.-

If any donation route from abroad to NRE A/c in India (of Donor), please donate with your cheque along with copy of passport of related donor, Only afterwards their donation will be credited in above mentioned A/c only.

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree SwaminarayanTemple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery,** Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji



प.पू. आचार्य महाराजश्री ने प.पू. लालजी महाराजश्री की ''समैयो'' की अध्यक्षता के पद पर सेवा हेतु स्वागत, उस समय हर्ष के आँसु के साथ प.पू. बड़े महाराजश्री ने उनका आर्लिगन किये थे । और माननीयश्री अमितभाई शाह तथा माननीयश्री हर्ष संघवी ने शुभेच्छा के हार पहनाये थे ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 “ Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026







Praful Kharsani

माननीयश्री अमितभाई शाह का सम्मान करते धर्मकुल ।